Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीः ।

अमरुककविप्रणीत

अमरुशतक ।

अनुवादक

ऋषीश्वरनाथभट्ट बी. ए. भाष्ट

इसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

इनके "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मॅनेजर रामचंद्र राघो इन्होंने

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९७१, शके १८३६.

कल्याण-मुंबई.

रजिष्टरी सब हक यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीः ।

अमरुककविप्रणीत

अमरुशतक ।

अनुवादक

ऋषीश्वरनाथभट्ट बी. ए. प्राज्ञ

इसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

इनके "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मॅनेजर रामचंद्र राघो इन्होंने

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९७१, शके १८३६.

कल्याण-मुंबई.

GHULAM MOHAMED & SONS. BOOK SELLERS. Mai Suma Bazar, SRINAGER, Kashmir. SH.

रजिष्टरी सब हक्क यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रखखा है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

20075
1.12
16.3.19

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण.

काशीनिवासी

पीयूष-प्रवाह-सम्पादक, स्वर्गीय

व्यास कालीशंकर शर्मा के

स्मरणार्थ

अर्पित.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका.

अमरुककवि.

अमरुक कविके समयका कुछ पता नहीं लगता । प्राचीन युगमें न तो इतिहास लिखनेकी प्रथा थी और न इतिहाससे लोगोंको प्रेम था। कवि स्वयं भी आत्म-वृत्तान्त बहुत कम लिखते थे । इसका परिणाम यह हुआ कि जब किसी कविके समयका निर्णय करना होता है तब अनुमानोंका सहारा लेना पड़ता है । अनुमानके द्वाराही यह जाना गया है कि अमरुक ईसवी सन्‌की नवीं सदीसे पहले हुआ; क्योंकि आनंद-वर्धनाचार्य नवम शतकमें हुए और उन्होंने ध्वन्यालोकके तीसरे उद्योतमें लिखा है कि—

" मुक्तकेषु हि प्रबंधेष्विव रसबंधाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते यथा ह्यमरुकस्य कवेर्मुक्तकाः शृंगाररसस्यंदिनः प्रबंधायमानाः प्रसिद्धा एव । "

अमरुक जातिका सुनार था और ललित कलाओंमें प्रवीण था । यह किम्वदन्ती है कि मंडनमिश्रकी पत्नी शारदाके प्रश्नोंका

" Dr. Peterson quotes from a commentary
... विश्वप्रख्यातनाडिंधमकुलतिलको विश्वकर्मा द्वितीयः
from which we understand that the author belonged to the goldsmiths' class. "
(Krishnamacharya's History of Sanskrit Literature.)

२ " क्रीडाधाम्नः कलानाममरुकसुकवेः केऽप्यमी श्लोकपादाः "
(महाराजश्रीअर्जुनवर्मदेव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तर देनेके लिये शंकराचार्यने गतप्राण अमरुक राजाके शरीरमें प्रवेश करके अमरुशतक बनाया। रविचन्द्रनेभी अमरुशतककी टीकाके आरंभमें इसका उल्लेख किया है परन्तु यह भ्रममूलक है। शंकरदिग्विजय देखनेसे इसकी असत्यता स्पष्ट मालूम होती है। शारदाके प्रश्न ये थे-

कलाः कियत्यो वद पुष्पधन्वनः
किमात्मिकाः किंच पदं समाश्रिताः।
पूर्वे च पक्षे कथमन्यथा स्थितिः
कथं युवत्यां कथमेव पूरुषे ॥

शारदाके प्रश्न सुनकर शंकराचार्यने सोचा कि उत्तर न दे
मेरी सर्वज्ञतामें फरक आता है और उत्तर देनेसे, संन्यासी हो
कारण, कामशास्त्रचर्चासे धर्मक्षय होता है, इसलिये उत्तरके
एक मासकी अवधि लेकर वे शिष्योंसहित आकाशमें उड ग
अमरुकराजा शिकार खेलने वनमें आया था। वह दैवये
वहीं मर गया। उसका शरीर एक वृक्षके तले रक्खा था
रानियां उसे चारों ओरसे घेरकर विलाप कर रहीं थीं। शं
चार्यने, उडते २, उसे देखकर सनन्दननामक शिष्यसे स
की। फिर उन्होंने अपने शरीरको एक पर्वतकी गुफामें
उसकी रक्षाका भार शिष्योंको सौंपा और आप योगयु
अमरुकराजाके शरीरमें प्रवेश कर गये। अमरुकके जी
मंत्री और रानियां बेहद प्रसन्न हुईं और शंकराचार्य उनके
राजधानीको चले गये। वहां बडी २ लावणिक रानियोंके
भोगविलास करके वे कामतत्वसे परिचित हो गये। फिर उ
वात्स्यायनके कामसूत्रोंके अनुकूल एक निबंधकी रचना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और, प्रतीत होता है कि, उसमेंही शारदाके प्रश्नोंके उत्तर-कार्मी समावेश कर दिया। अमरुशतक निर्माण करनेकी सूचना शंकरदिग्विजयभरमें कहीं नहीं है और न इसमें कुछ उन प्रश्नोंके उत्तरके अनुरूप है। इस कारण यह जनश्रुति प्रामाणिक नहीं समझी जा सकती। कदाचित् कोई खयाल करें कि शारदाके प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये जो निबंध शंकराचार्यने बनाया था उसके बाद अमरुशतककी रचना की होगी ? तो इसका उत्तर यही हो सकता है कि उस निबंधका निर्माण तो शारदाके प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये और अपनी कीर्तिकी रक्षाके लिये किया गया था लेकिन शंकराचार्य, यति होकर, शृंगाररसके इतने व्यसनी क्यों हो जाते कि अमरुशतकभी बना डालते। यह वृत्तान्त स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित दुर्गाप्रसादजीने रसिकसंजीविनीटीकाके उपोद्घातमें लिखा है।

अमरुककी कविता.

अमरुक बडा विद्वान् था। उसका अलंकारशास्त्रपर पूरा आधिपत्य था। महाराज अर्जुनवर्मदेवने अमरुकको महाकवि बतलाया है, यथा—

"रसध्वनेरुपनिबंधनक्षमा अमरुकप्राया एव महाकवयः"

वास्तवमें अमरुकने इस शतककी रचनामें अपनी प्रतिभाकी अद्भुत शक्ति प्रदर्शित की है। यह उसकी तलस्पर्शिनी प्रतिभाका नमूना है। इसके भाव बडे महन और गंभीर हैं। मानुषिक हृदयकी क्रियाओंका विशद ज्ञान हुए विना कोई कवि भाव, अनुभाव आदिके चित्रणमें इतना सिद्धहस्त नहीं हो सकता। अमरुशतक पढनेसे कविकी अपूर्व कल्पनाशक्तिका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिचय मिलता है। इसके एक २ श्लोकमें इतनी बातें भरी हैं कि जिनपर कई २ निबंध लिखे जा सकते हैं। भरतटीकाकारने ठीक लिखा है–

"अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबंधशतायते"

अमरुशतकके मुक्तक[1] रस, अलंकार और ध्वनिमें सराबोर हो रहे हैं। इनमेंसे रस टपका पडता है। स्वाभाविक बोलचाल और हावभावके वर्णनमें ये अपना जोड नहीं रखते। स्वभावानुकूल वर्णनही चित्ताकर्षक होता है। आज कालिदासके ग्रंथोंका मान इसीसे है कि उनमें हरएक विषयका स्वभावानुकूल विवेचन है। यही हाल अमरुशतककाभी है। एक तो चमत्कारपूर्ण स्वाभाविक वर्णन और वहभी सालंकार तथा रसध्वनिगर्भित। फिर क्या कहना है–

"मधुरं हि पयः स्वभावतो ननु कीदृक् सितशर्करान्वितम्"

अमरुशतककी संस्कृतटीका.

स्वर्गीय महामहोपाध्याय दुर्गाप्रसादजीने अमरुशतककी सात टीकाओंका उल्लेख किया है; यथा–

(१) महाराजअर्जुनवर्मदेव[2]कृत रसिकसंजीविनी.
(२) वेमभूपालकृत शृंगारदीपिका.
(३) रुद्रमदेवकृत टीका.
(४) रविचन्द्रकृत कामदा टीका.

---

१ मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम् (काव्य–प्रकाश)

२ महाराज अर्जुनवर्मदेव मालवाधिप राजा भोजके वंशज थे, तेरहवीं सदीके पूर्वार्धमें हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५) सूर्यदासकृत शृंगारतरंगिणी.
(६) शेषरामकृष्णकृत रसिकसंजीविनी.
(७) एक कर्तृनामरहित टीका.

इन सब टीकाओंमें श्लोकोंके क्रममें बडी गडबड है । ऐसी गडबड कोषात्मक काव्योंमें बहुधा देखी गई है । इसके अतिरिक्त किसीमें १०० श्लोक हैं किसीमें १०२ । यहांतक कि रसिकसंजीविनीके परिशिष्टगत श्लोकोंको जोडनेसे सबका नंबर १६३ तक पहुँच गया है । इनमेंसे कोई २ श्लोक और २ कवियोंके ग्रंथोंमें मिलते हैं । इस व्यतिक्रमका यथार्थ कारण अनुमानके द्वारा जानना बहुत कठिन है । मेरे पास अमरुशतककी पांच पुस्तकें हैं, ३ सटीक और दो मूलमात्र । इनमेंसे चार पुस्तकोंमें १०० श्लोक हैं और उनका क्रम बराबर मिलता है । इन्हीं सौ श्लोकोंको मैंने इस संस्करणमें रक्खा है । परन्तु जो श्लोक रसिकसंजीविनी तथा शृंगारदीपिका दोनों टीकाओंमें पाये गये उन्हें मैंने परिशिष्टमें दे दिया है । जैसी गडबड श्लोकविन्यासमें है वैसीही पाठ–भेदमें भी है । अत एव जो पाठ अधिक पुस्तकोंमें पाया गया अथवा उत्तम मालूम हुआ उसेही मैंने रक्खा है । अपनी ओरसे उसमें कहीं परिवर्तन नहीं किया ।

हिन्दी अनुवाद.

यह अनुवाद स्वच्छंदतापूर्वक किया गया है । इसमें मुझे महाराज अर्जुनवर्मदेवकृत रसिकसंजीविनी, रविचन्द्रकृत कामदा तथा पंडित जीवानंद विद्यासागर बी० ए० कृत टीकाओंसे बहुत सहायता मिली है । उनके लिखनेवालोंका मैं बहुत ऋणी हूं । अनुवादमें श्लोकोंके शब्दार्थपर कम ध्यान दिया है । शाब्दिक अनुवादसे शृंगाररस रसिकोंका मनोरंजन भली भांति नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता था। इसलिये प्रत्येक श्लोकका आशय स्पष्ट करनेकी कोशिश की है। अनुवादके साथही अलंकार, रस, सात्विक, अनुभाव, नायिका आदिका उल्लेखभी कर दिया है और, जहां उपयुक्त समझा गया, लक्षणभी लिख दिये हैं पर यह विषय इतना जटिल है कि चाहे जितना विशद किया जाय कुछ न कुछ क्लिष्टता इसमें बनीही रहती है। निम्न लिखत पुस्तकोंकी मददसे मैंने इसका संकलन किया है और अधिकतर लक्षणभी इन्हींमेंसे दिये हैं इसलिये इनके कर्ताओंका मैं हृदयसे कृतज्ञ हूं—

जसवन्तजसोभूषण, भाषाभूषण, काव्यप्रभाकर, कविप्रिया, साहित्यदर्पण.

जहां कहीं अन्य कवियोंके भाव समान देखे वहां उनके पद्य दे दिये हैं। कहीं २ भाव कुछ २ मिल जाते हैं। ऐसे भावोंके पद्यभी तुलनार्थ दे दिये हैं। इनसे एक तो यह विदित होगा कि किस कविका कितना २ भाव दूसरेसे टकरा गया है और दूसरे एकही भावको दूसरे कविने किस रीतिसे प्रदर्शित किया है। हिन्दीके जो छंद उपयुक्त जान पड़े उन्हेंभी दे दिया है क्यों कि भाषा कोई हो चमत्कार होना मुख्य है—

जामें रस कुछ होत है, ताहि पढ़त सब कोय।
बात अनूठी चाहिये, भाषा कोऊ होय॥

(भारतेन्दु)

अनुवादमें भाषाकी सरलतापर विशेष ध्यान दिया है। जहां तक हो सका कठिन शब्दोंका प्रयोग नहीं किया है। उर्दूके शब्दभी कहीं २ आ गये हैं। जो शब्द दिन रात बोलचालमें आते हैं—जिन्हें बाल, वृद्ध सभी घर २ बोलते हैं—वे चाहे जिस भाषाके हों उनका प्रयोग आपत्तिजनक नहीं हो सकता। ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शब्दोंके बदलनेसे कुछ लाभ नहीं। बोलचालकी भाषा अपने आपही आपसे २ बदलती जाती है। यह कहीं नहीं सुना कि भाषा सुधारनेके लिये आजतक कोई कमीशन बैठा हो—

नरभाषा धारानदी, कबहुँ नहीं ठहरात।
जब २ जस बदला करें, तब २ तस कहि जात।
(पंडित सुधाकर द्विवेदी)

अमरुशतककी टीका लिखनेकी मुझमें योग्यता नहीं। अलंकार शास्त्रमें मैं बिलकुल वैदेशिक हूं। यह विषय बहुत गहन और जटिल है। इसपर कुछ लिखनेके लिये लेखनीको चचल करना हरएकका काम नहीं। जिन्होंने इसका खूब अनुशीलन किया है वेही इसके अधिकारी समझे जा सकते हैं। यह मेरा अनधिकारचर्चा है। मुझे यकीन है कि इसमें अनेक दोष रह गये होंगे। अतः यदि कोई पंडितवर कृपा कर उन्हें लिख भेजेंगे तो वे दूसरी आवृत्तिमें शुद्ध कर दिये जायँगे।

आगरा
विजयादशमी १९७०

अनुवादक.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लोकानुक्रमणिका ।

श्लोकारंभ.	श्लोकांक.	श्लोकारंभ.	श्लोकांक.
अङ्गं चंदनपांडु	.... ६९	करकिसलयं	.... १०६
अङ्गानामतितानवं	.... ४५	काञ्च्या गाढतरा	.... १८
अङ्गुल्यग्रनखेन	.... ८०	कान्ते कत्यपि	.... २५
अज्ञानेन पराङ्मुखीं	.... १४	कान्ते तल्पमुपागते	.... ११३
अद्यारभ्य यदि	.... १०९	कान्ते सागसि	.... ४१
अनालोच्य प्रेम्णः	.... ७६	कुतो दूरादेव	.... ८२
अलसवलितैः	.... ४	कोपस्त्वया यदि	.... ९४
अहं तेनाहूता	.... १११	कोपात्कोमल	.... ८
आदृष्टिप्रसरात्	.... ७४	कोपो यत्र भ्रुकुटि	.... ३४
आयाते दयिते	.... ७५	क प्रस्थितासि	.... ६९
आलंब्याङ्गण	.... १०३	क्षिप्तो हस्तावलग्नः	.... २
आलोलामलका	.... ३	गते प्रेमाबंधे	.... ३८
आशंक्य प्रणतिं	.... ४२	गाढालिंगन....	.... ३६
आस्तां विश्वसनं	.... १०२	चक्षुःप्रीतिप्रसक्ते	.... ११२
इयमसौ तरला....	.... ५१	चपलहृदये	.... ९६
उरसि निहित तारो	.... २८	चरणपतनं सख्यालापा	.... ११०
ऊरुद्वयं मृगदृशः	.... ९५	चरणपतनप्रत्याख्यान	.... ९७
एकत्रासनसंस्थितिः	.... १५	चिन्तामोह	.... ९०
एकस्मिन् शयने पराङ्मुख	१९	चिरविरहिणो	.... ३९
एकस्मिन् शयने विपक्ष	८३	जाता नोत्कलिका	.... ७८
कठिनहृदये	.... ४७	ज्याकृष्टिबद्ध	.... १
कथमपि कृत	.... ७३	तद्वक्त्राभिमुखं	.... ८१
कथमपि सखि	.... १२	तन्वङ्ग्या गुरु	.... ९१
कपोले पत्राली	.... ८७	तन्वी शशात्रिपथगा	.... ९९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लोकारंभ.	श्लोकांक.	श्लोकारंभ.	श्लोकांक.
तप्ते महाविरह	.... ८९	पुराभूदस्माकं	.... ६६
तस्याः सान्द्र	.... २२	प्रस्थानं वलयैः	.... ३१
त्वं मुग्धाक्षि	.... २३	प्रहरविरतौ....	.... ९
दंपत्योर्निशि	.... १३	प्रातः प्रात	.... २९
दत्तोऽस्याः प्रणयः	.... ५	बाले नाथ	.... ५३
दीर्घा वन्दनमालिका	.... ४०	भवतु विदितं	.... २७
दूरादुत्सुक	.... ४४	भ्रूभंगे रचिते	.... २५
दृष्टः कातर....	.... ७९	भ्रूभेदो गुणितः	.... १२
दृष्ट्वैकासन	.... १६	मन्दं मुद्रित	.... ४८
देशैरन्तरिता	.... ९३	मलयमरुतां	.... ८५
धीरं वारिधरस्य	.... ११	मुग्धे मुग्धतयैव	.... ६७
न जाने संमुखा	.... ६३	म्लानं पाण्डुकृशं	.... १०५
नभसि जलद	.... ५०	याताः किन्न	.... १०
नापेतोऽनुनयेन	.... १०१	रात्रौ वारिभरा	.... ९७
नार्यो मुग्धशठा	.... ७	रामाणां रमणीय	.... ५८
निःश्वासा वदनं	.... १०८	लग्ना नांशुक	.... ६२
नीत्वोच्चैर्विक्षिपन्तः	.... ५४	लाक्षालक्ष्म....	.... ८८
पटालग्ने पत्यौ	.... ३७	लिखन्नास्ते भूमिं	.... ६
परिम्लाने माने	.... २१	लीलातामरसा	.... ७०
पश्यामो मयि	.... २०	लोलद्भ्रूलतया	.... १०४
पश्याश्लेष	.... ७२	लोलैर्लोचन....	.... ६१
पादासक्ते	.... ६५	वरमसौ दिवसो	.... ६०
प्रीतस्तुषार	.... ४९	विरहविषमः	.... ६४
प्रीतो यतःप्रभृति	.... ६८	शून्यं वासगृहं	.... ७७
पुरस्तन्व्या	.... ४६	श्रुत्वा तन्व्या	.... ५५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लोकानुक्रमणिका ।

श्लोकारंभ.	श्लोकांक.	श्लोकारंभ.	श्लोकांक.
अङ्गं चंदनपांडु	.... ५१	करकिसलयं	.... १०६
अङ्गानामतितानवं	.... ४५	काञ्च्या गाढतरा	.... १८
अङ्गुल्यग्रनखेन	.... ८०	कान्ते कत्यपि	.... २५
अज्ञानेन पराङ्मुखीं	.... १४	कान्ते तल्पमुपागते	.... ११३
अद्यारभ्य यदि	.... १०९	कान्ते सागसि	.... ४१
अनालोच्य प्रेम्णः	.... ७६	कुतो दूरादेव	.... ८२
अलसवलितैः	.... ४	कोपस्त्वया यदि	.... ९४
अहं तेनाहूता	.... १११	कोपात्कोमल	.... ८
आदृष्टिप्रसरात्	.... ७४	कोपो यत्र भ्रुकुटि	.... ३४
आयाते दयिते	.... ५५	क्व प्रस्थितासि	.... ६९
आलम्ब्याङ्गण	.... १०३	क्षिप्तो हस्तावलग्नः	.... २
आलोलामलका	.... ३	गते प्रेमाबंधे	.... ३८
आशंक्य प्रणतिं	.... ४२	गाढालिंगन....	.... ३६
आस्तां विश्वसनं	.... १०२	चक्षुःप्रीतिप्रसक्ते	.... ११२
इयमसौ तरला....	.... ५१	चपलहृदये	.... ९६
उरसि निहित तारो	.... २८	चरणपतनं सख्यालापा....	११०
ऊरुद्वयं मृगदृशः	.... ९५	चरणपतनप्रत्याख्यान....	९७
एकत्रासनसंस्थितिः	.... १५	चिन्तामोह	.... ९०
एकस्मिन् शयने पराङ्मुख	१९	चिरविरहिणो	.... ३९
एकस्मिन् शयने विपक्ष	८३	जाता नोत्कलिका	.... ७८
कठिनहृदये	.... ४७	ज्याकृष्टिबद्ध	.... १
कथमपि कृत	.... ७३	तद्वक्त्राभिमुखं	.... ८१
कथमपि सखि	.... १२	तन्वङ्ग्या गुरु	.... ९१
कपोले पत्राली	.... ८७	तन्वी शरात्रिपथगा	.... ९९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लोकारंभ.	श्लोकांक.	श्लोकारंभ.	श्लोकांक.
तप्ते महाविरह	.... ८९	पुराभूदस्माकं	.... ६६
तस्याः सान्द्र	.... २२	प्रस्थानं वलयैः	.... ३१
त्वं मुग्धाक्षि	.... २३	प्रहरविरतौ....	.... ९
दंपत्योर्निशि	.... १३	प्रातः प्रात	.... २९
दत्तोऽस्याः प्रणयः	.... ५	बाले नाथ	.... ५३
दीर्घा वन्दनमालिका	.... ४०	भवतु विदितं	.... २७
दूरादुत्सुक	.... ४४	भ्रूभंगे रचिते	.... २४
दृष्टः कातर....	.... ७९	भ्रूभेदो गुणितः	.... ९२
दृष्ट्वैकासन	.... १६	मन्दं मुद्रित	.... ४८
देशैरन्तरिता	.... ९३	मलयमरुता	.... ८४
धीरं वारिधरस्य	.... ११	मुग्धे मुग्धतयैव	.... ६७
न जाने संमुखा	.... ६३	म्लानं पाण्डुकृशं	.... १०५
नभसि जलद	.... ५०	याताः किन्न	.... १०
नापेतोऽनुनयेन	.... १०१	रात्रौ वारिभरा	.... ९७
नार्यो मुग्धशठा	.... ७	रामाणां रमणीय	.... ५८
निःश्वासा वदनं	.... १०८	लग्ना नांशुक	.... ६२
नीत्वोच्चैर्विक्षिपन्तः	.... ५४	लाक्षालक्ष्म....	.... ८८
पटालग्ने पत्यौ	.... ३७	लिखन्नास्ते भूमिं	.... ६
परिम्लाने माने	.... २१	लीलातामरसा	.... ७०
पश्यामो मयि	.... २०	लोलद्भ्रूलतया	.... १०४
पश्याश्लेष	.... ७२	लोलैर्लोचन	.... ६१
पादासक्ते	.... ६५	वरमसौ दिवसो	.... ६०
पीतस्तुषार	.... ४९	विरहविषमः	.... ६५
पीतो यतःप्रभृति	.... ६८	शून्यं वासगृहं	.... ७७
पुरस्तन्व्या	.... ४६	श्रुत्वा तन्व्या	.... ५५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लोकारंभ.	श्लोकांक.	श्लोकारंभ.	श्लोकांक.
श्रुत्वा नामापि	.... ५७	सालक्तकेन	.... ९२
श्लिष्टः कंठ....	.... ५६	सुतनु जहिहि	.... ३५
संश्लिष्टे	.... ३२	सुप्तोऽयं सखि	.... ३३
सन्त्येवात्र गृहे	.... १०७	स्फुटतु हृदयं	.... ७१
सापत्न्यः प्रथमे	.... २६	स्वं दृष्ट्वा करज	.... ८९
सा बाला	.... ३०	हारो जलार्द्र	.... ९८
सा यावन्ति	.... ४३	हारोऽयं हरिणा	.... १००
सालक्तकं शत	.... ८६		

संशोधनपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	पूर्ण	पूर्ण
,,	१३	भी	की
६	०	ईर्षा	ईर्ष्या
,,	३	करुणाका	करुणका
,,	,,	करुणा	करुण
७	३	पूंछ	पुंछ
९	५	यया	हाव
,,	२१	दवा	देवा
१०	९	करुणा	करुण
,,	१८	पूरा	पूरो
,,	२१	words	words:
११	२	समर्थ न	समर्थन
,,	२१	पीड	पीड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संशोधनपत्र ।

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२	४	भावका	भावकी
,,	१२	है	है
१३	१७	करनेसे	कहनेसे
२१	९	प्रगल्मा	प्रगल्भा
३०	१०	सुखी	सखी
३३	१०	ब्यात	ब्यास
३५	४	विकीडित	विक्रीडित
३६	३	विभाव	०
,,	४	अन्तगति	अन्तर्गत
,,	१९	माणि, नूपुर	मणिनूपुर
३७	९	मदनयां	मन्दायां
३८	१७	क्कम	क्रम
४०	५	प्र प्त	प्राप्तं
४३	१३	मोगि	भोगि
,,	१८	किंतु	किन्तु
४४	१७	मरण	मरणा
,,	२२	सुदशा	सुद्दशा
४८	६	चमेलिन	चमेलि न
५०	७	सिखाई	सिखाई
५१	३	किञ्चिन्नत	कोपाञ्चित
,,	१७	बांकी	बाकी
५४	१४	त्वयातु	त्वयाऽद्य
५५	१८	चषके	चषक
५६	१६	घनरौ	घनेरौ
५७	१५	मरालसा	मरालस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संशोधनपत्र।

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
५९	१६	जालि	जाति
६०	१६	रसितां	रसितं
,,	१७	शय्यायां	शय्याया
६२	९	इर्ष्य	इष्य
६४	३	धैता	धौता
६७	१०	अंसुआन	अंसुआ न
६७	२१	प्रश्नको	प्रश्नका
६८	२०	ewels	jewels
७१	३	होनेसे	होनेके कारण
७३	१७	बिभेपि	बिभेषि
७६	१२	स्वतं-	स्वतंत्र-
७८	६	करुणा	करुण
८३	१८	हैं	है
८७	३	कही	कहीं
८८	११	र्षया	र्ष्यया
,,	,,	गच्छन्तो	गच्छन्ती
,,	१५	दखकर	देखकर
९०	२१	नृग	मृग
९७	१४	विाध	विधि
९८	१३	घाई	द्याई
१०१	१९	सतस्ती	सप्तशती
१०२	१४	शिरः-	शिर-
,,	१६	ताम्र	त्ताम्र
१०३	१६	तत्ते नेव	तत्तेनैव

इति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ

अमरुककविप्रणीतं

अमरुशतकम्.

भाषाटीकया समुद्भासितम्.

ज्याकृष्टिबद्धखटकामुखपाणिपृष्ठप्रेङ्खन्नखांशुचय-
संवलितोऽम्बिकायाः ॥ त्वां पातु मञ्जरितपल्लव-
कर्णपूरलोभभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्कटाक्षः ॥ १ ॥

नृत्यमें धनुषकी डोरी खैंचनेसे कानतक पहुँचे हुए खटका-मुख हाथकी पीठपर फैलती हुई नखकिरणोंसे मिश्रित और

१–खटकामुखलक्षण–

अस्या एव यदा मुष्टेरूर्ध्वोऽङ्गुष्ठः प्रयुज्यते ।
हस्तकः शिखरो नाम तदा ज्ञेयः प्रयोक्तृभिः ॥
शिखरस्यैव हस्तस्य यदाङ्गुष्ठनिपीडिता ।
प्रदेशिनी भवेद्वक्रा कपित्थो जायते तदा ॥
उत्क्षिप्ता च यदा वक्रानामिका सकनीयसी ।
एतस्यैव कपित्थस्य तदा स्यात्खटकामुखः ॥

अर्थात् मुष्टिके ऊपर अंगूठेकी योजना करनेसे शिखरहस्तक होता है, शिखरहस्तकमें अंगूठेके दबानेसे तर्जनी टेढी हो जाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंजरीयुक्त किसलयकर्णपूरके आसपास लोभसे घूमते हुए भ्रमरके विलासको धारण करता पार्वतीका कटाक्ष तुम्हारी रक्षा करे ॥ १ ॥

(भाव यह है कि नृत्यमें धनुषकी डोरी खैंचनेसे पार्वतीका हाथ कानतक पहुँच गया और उसकी पीठपर नखकिरणें चमकने लगीं । वह मंजरीयुक्त पल्लवका कर्णपूर मालूम हुआ । उसके पासही चंचल कटाक्ष भ्रमरसा लगा)

यहां पार्वतीके नृत्यका वर्णन है । श्रृंगाररसकी प्रधान आलम्बनविभाव नायिकाको सूचित किया है । नायिकाकी प्रधानता सूचित करनेमें कटाक्ष प्रथम है, इससे पहले उसकाही वर्णन है । भ्रमरसे सादृश्य दिखानेसे श्याम कटाक्षसे आशय है, जिसका परिणाम मारण होता है, यथा—

अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार ।
जियत मरत झुकि २ परत, जिहिं चितवत इक बार ॥

पार्वतीकी नृत्यलीलासेही दैत्योंका मरण सूचित कर उसका अद्भुत प्रभाव दिखाया है ।

यहां अंबिकाविषयक रति प्रधान है । धनुषकी डोरी खैंचकर बलपूर्वक कानतक पहुँचानेसे युद्धवीररस रतिका अंग है, इस कारण यहां रसवत् अलंकार है यथा—

तब कपित्थ होता है, और कपित्थमें अनामिका तथा कनिष्ठिका टेढी होकर ऊपरको उठ जायँ तब खटकामुख होता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जहँ रसको कै भावको, अंग होत रस आइ ।
तिहि रसवत भूषण कहैं, सकल सुकविसमुदाइ ॥

नखकिरणोंसे मंजरीकी, करसे पल्लवकर्णपूरकी तथा कटाक्षसे भ्रमरकी एकरूपता होनेसे रूपक है, यथा–

जो काहूके रूप इव, रूप बनावै और ।
सो वह नाटक न्यायसों, है रूपक नृप मौर ॥

हाथको मंजरीयुक्त पल्लव समझकर भ्रमरके घूमनेसे भ्रांति-अलंकार है, यथा–

भ्रांति औरको औरही, निश्चय जब अनुमान ।
तुव सँग फिरत चकोर है, वदन सुधानिधि जान ॥

कटाक्षमें भ्रमरका विलास होनेसे दूसरी निदर्शना है यथा–

कहिये त्रिविध निदर्शना, वाक्य अर्थ सम दोइ ।
एक किये पुनि और गुन, और वस्तुमें होइ ॥
कहिये कारज देखि कछु, भलौ बुरौ फल भाउ ।
दाता सौम्य सो अंक बिनु, पूरन चंद बनाउ ॥
देखौ सहजहि धरत यह, खंजनलीला नैन ।
तेजस्वीसों निबल बल, महादेव अरु मैन ॥

इन तीनोंका अंगांगिभाव संकर है, यथा–

बीज वृक्षके न्याय करि, इक इककौ अंग होय ।
सो अंगांगी भाव है, कवि गुलाब मति जोय ॥

आशीर्वाद अलंकारभी है, यथा–

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल श्लोकमें "संवलितोऽम्बिकायाः" और "लोभभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्" पदोंमें वृत्त्यनुप्रास अलंकार है, यथा—

प्रति अक्षर आवृत्ति बहु, वृत्ति तीनि विधि मानि ।

इस कारण यहां अर्थालंकार और शब्दालंकारकी संसृष्टि है, यथा—

अलंकार जो द्विविध हैं, ता कहँ जहँ कछु मेल ।
भेदरूपसे जानिये, सोइ संसृष्टि अपेल ॥

वसन्ततिलका छंद है, यथा—

ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

अर्थात् त भ ज ज गण तथा दो गुरु ।

शिशुपालवधके अधो लिखित श्लोकसे इसका शब्दविन्यास कुछ मिलता है, यथा—

वदनसौरभलोभपरिभ्रम-
द्भ्रमरसंभ्रमसंभृतशोभया ।
चलितया विदधे कलमेखला-
कलकलोऽलकलोलदृशाऽन्यया ॥

**क्षिप्तो हस्तावलग्नः प्रसभमभिहतोऽप्याद-
दानोंऽशुकान्तं गृह्णन् केशेष्वपास्तश्चरणनि-
पतितो नेक्षितः संभ्रमेण ॥ आलिङ्गन्योऽव-
धूतस्त्रिपुरयुवतिभिः साश्रुनेत्रोत्पलाभिः**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामीवार्द्रापराधः स दहतु दुरितं शाम्भवो वः शराग्निः ॥ २ ॥

जब कामी अपराध करता है तब नायिका उससे रूठ जाती है और मानके कारण उसकी आंखोंमें आंसू आ जाते हैं । उस समय यदि कामी उसका हाथ पकडता है तो वह छुडा लेती है, वस्त्रका पल्ला पकडता है तो वह बलपूर्वक (लीलाकमलसे) उसका ताडन करती है, (चुंबन करनेके लिये) केश पकडता है तो वह उसे हटा देती है, चरणोंमें पडता है तो वह उसे अभिमानके कारण देखती नहीं, आलिंगन करता है तो वह उसे तिरस्कारपूर्वक दूर सरका देती है । इसी प्रकार त्रिपुरदाहके समय अश्रुपूर्ण नेत्रकमलोंवाली त्रिपुरकी युवतियोंने शंभुके बाणसे प्रकट हुए अग्निको (तत्काल अपराध करनेवाले कामीके समान) हाथसे लगनेपर दूर फेंका, वस्त्रके पल्लेसे लगनेपर हाथसे बलपूर्वक फटफटा दिया, केशोंमें लगनेपर (हाथसे) मींज दिया, चरणोंमें पडा घबराहटसे न देखा, शरीरसे लगनेपर झाड दिया ऐसा शंभुके बाणसे प्रगट हुआ अग्नि तुम्हारे दुःखोंको भस्म करे ॥ २ ॥

(संकेत—तत्काल अपराध करनेवाले कामीभी अग्निसे समानता दिखानेसे उसका अत्यन्त संतापजनक होना लक्षित किया है)

यहां महादेवविषयक रति प्रधान है । महादेवके उत्साहसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी पुष्टि होती है । करुणरस उत्साहका अंग है तथा ईर्षा-मानात्मक विप्रलंभ शृंगार करुणाका पोषक है । यहां करुणा और शृंगार रसोंका स्वतंत्रतापूर्वक समावेश है । अश्रु सात्विक और असूया व्यभिचारी भाव हैं । रस भावको पुष्ट करके प्रधान बनाते हैं इसलिये रसवत् अलंकार है । आशीर्वाद अलंकारभी है । कामी और शराग्निके वृत्तान्तोंका एक २ वाक्यसेही प्रतिपादन होनेके कारण श्लेष[1]साधर्म्यसे उपमा है यथा—

भेदवान द्वय वस्तुमें, जहँ यक धर्म बखान ।
अलंकार उपमा सोई, पूर्णा लुप्ता जान ॥

स्रग्धरा छंद है, यथा—

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

अर्थात्—म, र, भ, न, य, य, य, गण तथा सात सात अक्षरोंपर तीन वार विश्राम ॥

आलोलामलकावलीं विलुलितां बिभ्रच्चल-त्कुण्डलं किंचिन्मृष्टविशेषकं तनुतरैः स्वेदां-भसः शीकरैः ॥ तन्व्या यत्सुरतान्ततान्तन-यनं वक्त्रं रतिव्यत्यये तत्त्वां पातु चिराय किं हरिहरब्रह्मादिभिर्दैवतैः ॥ ३ ॥

---

१ शब्दैः स्वभावादेकार्थैः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढीली चंचल अलकावली तथा हिलते हुए कुण्डलोंको धारण करता, पसीनेकी बडी महीन बूंदोंसे जिसका तिलक कुछ पूंछ गया है और सुरतके अन्तमें जिसके नेत्र अलस हो गये हैं ऐसा तन्वीका मुख विपरीतरतिमें चिरकालतक तुम्हारी रक्षा करे। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि देवताओंसे क्या है ॥ ३ ॥

संभोगशृंगार रस। कंप, स्वेद, सात्विक। श्रम संचारी भाव। प्रौढा नायिका, यथा–

स्मरांधा गाढतारुण्या समस्तरतकोविदा।
भावोन्नता दरव्रीडा प्रगल्भाऽऽक्रान्तनायका ॥

ब्रह्मा आदि देवताओंका निषेध होनेसे आक्षेप अलंकार यथा–

उक्तिर्यत्र प्रतीतिर्वा प्रतिषेधस्य जायते।
आचक्षते तमाक्षेपालंकारं।

प्रौढाके मुखका यथावद्वर्णन होनेसे स्वभावोक्ति, यथा–

सम्यक् स्वभाववर्णनं स्वभावोक्तिः।

आशीर्वाद अलंकारभी है। 'रक्षा करना' ब्रह्मा आदि देवताओंसे हटाकर प्रौढाके मुखमें स्थापित करनेसे परिसंख्या, यथा–

परिसंख्या इक थल बराजि, दूजे थल ठहराय।

यहां उत्तम स्वेदका वर्णन है, यथा–

स्वेदो हि त्रिविधः प्रोक्त उत्तमाधममध्यमः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रमे महति योऽत्यल्प उत्तमः स प्रकीर्तितः ॥

शार्दूलविक्रीडित छन्द, यथा–

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।

अर्थात्–म, स, ज, स, त, त, गण तथा एक गुरु और १२।७ पर विराम ॥

अलसवलितैः प्रेमार्द्रार्द्रैर्मुहुर्मुकुलीकृतैः क्षण-
मभिमुखैर्लज्जालोलैर्निमेषपराङ्मुखैः ॥ हृद-
यनिहितं भावाकूतं वमद्भिरिवेक्षणैः कथय
सुकृती कोऽयं मुग्धे त्वयाद्य विलोक्यते ॥ ४ ॥

हे मुग्धे ! मन्द और तिरछे, प्रेमसे अत्यन्त आर्द्र, वार २ आधे मिचे हुए, क्षणभरके लिये सन्मुख किये, लज्जासे चंचल, निमेषरहित, हृदयस्थित प्रणयाभिलाषको मानों प्रकट करते हुए नेत्रोंसे कह किस भागवान्को आज तू देखती है ? ॥ १ ॥

सखीकी उक्ति नायिकासे । पूर्वानुरागदर्शनात्मक संभोग शृंगार । नायिका मुग्धा, यथा–

प्रथमावतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा ।
कथिता मृदुश्च माने समधिकलज्जावती मुग्धा ॥

जिसको देखती है उसमें आसक्त होनेका अनुमान होनेसे अनुमान अलंकार, यथा–

लिंगाद्यैर्लिंगिनो ज्ञानमनुमानं तदुच्यते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुग्धाकी दृष्टिका यथावद्वर्णन होनेसे स्वभावोक्ति । नेत्रोंकेही अनेक भाव वर्णन करनेसे कारक दीपक, यथा–

कारक दीपक एकमें, क्रमतें भाव अनेक ।

यथा नाट्यालंकार, यथा–

भ्रूनेत्रादिविकारैस्तु संभोगेच्छाप्रकाशकः ।
भाव एवाल्पसंलक्ष्यविकारो हाव उच्यते ॥

नर्मस्फोट, यथा–

नर्मस्फोटो भावलेशैः सूचितोऽल्परसो मतः ।

उत्प्रेक्षा अलंकारभी है ।

हरिणी छन्द, यथा–

नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।

अर्थात्–न, स, म, र, स, गण तथा एक लघु, एक गुरु, और ६ । ४ । ७ पर विश्राम । तुलनार्थ–

करे चाहसों चुटकिकै, खरे उडौं हैं मैन ।
लाज नवाये तरफरत, करत खूंदसी नैन ॥
कहत नटत रीझत खिजत, मिलत खिलत लजियात ।
भरे भौनमें करत हैं, नैननिमें सब बात ॥

(बिहारी सतसई.)

दत्तोऽस्याः प्रणयस्त्वयैव भवता चेयं चिरं लालिता दैवादद्य किल त्वमेव कृतवानस्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवं विप्रियम् ॥ मन्युर्दुःसह एव यात्युपशमं नो सान्त्ववादैः स्फुटं हे निस्त्रिंश विमुक्तकण्ठकरुणं तावत्सखी रोदितु ॥ ९ ॥

तुमनेही इसे प्रेमका आश्रय दिया और तुमनेही इसका बहुत कालतक लाड प्यार किया, दैवयोगसे तुमनेही आज इसका नया अपराध किया। इसका क्रोध असह्य है। साफ दीखता है कि यह प्रीतिवचनोंसे शान्त न होगा। इस कारण हे निर्दय! मेरी सखीको जी खोलकर करुणास्वरसे रोने दो (क्योंकि यदि यह न रोवेगी तो दुःखके भारसे इसका हृदय विदीर्ण हो जायगा) ॥ ९ ॥

सखीका वचन नायकसे। ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार। अमर्ष असूया संचारी भाव। मध्या धीराधीरा नायिका। प्रीतिवचनोंके द्वाराभी क्रोध शांत न होनेसे विशेषोक्ति अलंकार यथा—

विशेषोक्ति जहँ हेतुसों, कारज उपजै नाहिं।

प्रीतिवचनोंसे क्रोध शांत न होनेका समर्थन करनेसे काव्यलिंग यथा—

---

१ यथा—पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते ॥

(उत्तररामचरित)

Give sorrow words the grief that does not speak
Whispers the over- fraught heart and bids it break.

(शेक्सपियर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काव्यालिंग जहँ युक्तिसों, अर्थ समर्थ न होय ।

क्रोध शांत न होना भविष्यत् बातको प्रत्यक्ष कहनेसे भाविक यथा—

भाविक भूत भविष्यकौ, परतछ कहत बनाय ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

लिखन्नास्ते भूमिं बहिरवनतः प्राणदयितो निराहाराः सख्यः सततरुदितोच्छूननयनाः ॥ परित्यक्तं सर्वं हसितपठितं पञ्जरशुकैस्तवावस्थाचेयं विसृज कठिने मानमधुना ६

हे कठिने ! बाहर तेरा प्राणनाथ नीचा मुख करके धरती कुरेद रहा है, सखियोंने कुछ खाया पिया नहीं है और उनकी आंखें निरन्तर रोनेसे सूज गई हैं, पिंजरेके तोतोंने हँसना, पढना सब छोड दिया है, और तेरी यह दशा है, इस लिये अबभी मान छोड दे ॥ ६ ॥

सखीकी उक्ति मानिनीसे । मानिनी लक्षण—

पियसों करै जु मान तिय, वहै मानिनी जान ।

यहां गुरुमान है, यथा—

पियसूचक अपराधको, इंगित कहिये मान ।
त्रिविध मानसों मानिये, लघु मध्यम गुरु आन ॥
आनि तिया रतिपीड लखि, होय मान गुरु आइ ।
पाइ परे भूषण भरे, छूटत कहूं बराइ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । नायिकाके दुःखी होनेसे उसके साथ सबका दुःखी होना कहनेसे सहोक्ति, यथा–

उक्ति जहां सह भावका, नृपति सहोक्ती सोय ।

मानिनीके दुःखी होनेके कारण प्रियतम, सखी और शुकके दुःखी होनेसे प्रथम असंगति, यथा–

तीनि असंगति काज अरु, कारन न्यारे ठाम ।
और ठौरही कीजिये, और ठौरको काम ॥
और काज आरंभिये, औरै करिये दौर ।

यहां बहानेसे सखी अपना कार्य साधन करती है इससे पर्यायोक्तिभी है, यथा–

पर्यायोक्ति प्रकार है, कछु रचनासों बात ।
मिस करि कारज साधिये, जो है चित्त सुहात ॥

शिखरिणी छन्द है, यथा–

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।

अर्थात्–य, म, न, स, भ, गण, एक लघु, एक गुरु तथा ६ । ११ पर विश्राम ॥

नार्यस्तन्वि हठाद्धरन्ति रमणं तिष्ठन्ति नो वारितास्तत्किं ताम्यसि किं च रोदिषि मुधा तासां प्रियं मा कृथाः ॥ कान्तः केलिरुचिर्युवा सहृदयस्तादृक्पतिः कातरे किं नो बर्करकर्करैः प्रियशतैराक्रम्य विक्रीयते ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे कृशोदरि ! स्त्रियां सहसा तेरे रमणको वशमें कर लेती हैं, मने करनेपरभी नहीं मानती हैं । इस कारण तू क्यों संताप करती है और क्यों वृथा रोती है ? (रोकर) उनका प्रिय मत कर । हे कातरे ! तेरा पति मनोहर, क्रीडारसिक, तरुण, तथा सहृदय है । उसे उनसे छीनकर वहुतसे वर्कर, कर्कर प्रिय वचनोंसे मोल क्यों नहीं लेलेती है ? ॥ ७ ॥

सखीका वचन नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । बिषाद, दीनता संचारी भाव । अश्रु सात्विक । कलहान्तरिता नायिका यथा–

चाटुकारमपि प्राणनाथं रोषादपास्य या ।
पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्तरिता तु सा ॥

मानभंगके छः उपायोंमेंसे यहां भेदका प्रयोग है, यथा–

साम भेदोऽथ दानं च नत्युपेक्षे रसान्तरम् ।
तत्र प्रियवचः साम भेदस्तत्सख्युपार्जनम् ॥

यहां रोकर वश करनेको वरजकर वर्बर कर्कर वचनोंसे वश करना करनेसे परिसंख्या अलंकार है । प्रियवचनोंसे पतिको मोल लेनेसे परिवृत्ति अलंकार है, यथा–

परिवर्तन उलटौ अहै, कछु देके बहु लेय ।

---

१ वर्कर=तरुणपशु, कर्कर=चर्म-रज्जु ।
अर्थात् जो वचन उसे इस भांति वशमें कर लें जैसे रस्सीसे पशु वशमें हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ-

लीलयैव सुतनोस्तुलयित्वा गौरवाढ्यमपि लावणिकेन ।
मानवञ्चनाविदा वदनेन क्रीतमेव हृदयं दयितस्य ॥
(शिशुपालवध.)

कोपात्कोमललोलबाहुलतिकापाशेन बद्ध्वा
दृढं नीत्वा केलिनिकेतनं दयितया सायं
सखीनां पुरः ॥ भूयोऽप्येवमिति स्खलन्मृदु-
गिरा संसूच्य दुश्चेष्टितं धन्यो हन्यत एव
निह्नुतिपरः प्रेयान् रुदत्या हसन् ॥ ८ ॥

सायंकाल क्रोध करके कोमल तथा चंचल बाहुलतारूपी पाशसे पतिको दृढ बांधकर और सखियोंके सामने क्रीडाभवनमें लाकर रोती हुई दयिता " फिरभी तू ऐसा (करेगा) " यों टूटे फूटे तथा कोमल वचनोंसे उसके दुराचारकी सूचना दे, अपना दोष छुपानेसे मुसकुराते पुण्यवान् कान्तकाही (लीलाकमलसे) ताडन करती है ॥ ८ ॥

कविकी उक्ति। यहां ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार संभोगशृंगारमें बदल गया है । चञ्चल बाहुलता कहनेसे कंप, तथा टूटे फूटे वचन कहनेसे स्वरभंग सात्विक । प्रौढा अधीरा नायिका यथा-

प्रौढ अधीरा दोष लखि, तरजति ताडति पीय ।

धृष्ट नायक, यथा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवै लाज न धृष्टको, किये कोटि धिक्कार ।

जातिअलंकार यथा–

जाति सु जैसौ जासुकौ, रूप कहैं तिहि साज ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द । समानभाव यथा–

रोस करि पकरि परोसते लियाई घरै पीको प्राणप्यारी भुज-लतनि भरै भरै । कहैं पदमाकर ये ऐसौ दोस कीजौ फिरि, सखिन समीप यों सुनावति खरै खरै ॥ प्यौ छल छपावे बात हँसि बहरावे तिय, गद्गद कण्ठ दृग आंसुन झरै झरै । ऐसी धन धन्य धनी धन्य है सु ऐसो जाहि, फूलकी छरीसों खरी हनति हरै हरै ॥

प्रहरविरतौ मध्ये वाह्नस्ततोऽपि परेऽथवा किमुत सकले जाते वाह्नि प्रिय त्वमिहैष्यसि ॥ इति दिनशतप्राप्यं देशं प्रियस्य यियासतो हरति गमनं बालालापैः सबाष्पगलज्जलैः ॥ ९ ॥

"हे प्रिय, तुम पहले पहरके अंतमें वा मध्याह्नमें वा उसकेभी पीछे अर्थात् तीसरे पहर या सब दिन बिताकरही यहां आओगे" ऐसे वचनोंसे मुग्धा सौ दिनमें पहुँचने योग्य देशको जानेवाले पतिका जाना बाष्पसहित आंसू टपकाकर रोकती है ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखीकी उक्ति सखीसे । विप्रलंभ शृंगार । मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका यथा–

प्रवसितपतिका सोई, चलन चहत परदेश पिय ।
दीनता व्यभिचारी भाव, अश्रु सात्विक वचन अनुभाव ।

जातिअलंकार उपायाक्षेप यथा–

कौनहु एक उपाय करि, रोकै प्रिय प्रस्थान ।
तासों कहत उपाय कवि, यह आक्षेप सुजान ॥

हरिणी छंद । समानभाव, यथा–

सौ दिनकौ मारग तहांकौ, बेगि मांगि बिदा, प्यारो पद्माकर प्रभात राति बीते पर । सो सुनि पियारी पिय गमन बराइबेको आंसुन अन्हाई बैठि आसन सुतीते पर । बालम विदेसै तुम जात हो तो जाउ पर सांची कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर । पहरके भीतर कै दो पहर भीतरही, तीसरे पहर कैधों सांझही बितीते पर ॥

यातः किं न मिलन्ति सुन्दरि पुनश्चिन्ता त्वया मत्कृते नो कार्या नितरां कृशासि कथयत्येवं सबाष्पे मयि ॥ लज्जामन्थरतारकेण निपतद्धाराश्रुणा चक्षुषा दृष्ट्वा मां हसितेन भाविमरणोत्साहस्तया सूचितः ॥ १० ॥

" हे सुन्दरी ! (विदेश) गये क्या फिर मिलते नहीं हैं ? तू मेरी तरफसे कुछ चिन्ता मत कर क्योंकि तू बहुत कृश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है" जब मैंने सबाष्प होकर इस प्रकार कहा तब उसने लज्जासे निश्चल पुतलीवाले और आंसुओंकी झडी लगाते नेत्रसे मुझे देखकर हाससे आवश्यक मरणमें अपना उत्साह सूचित किया ॥ १० ॥

नायककी उक्ति सखासे । प्रवासविप्रलंभ शृंगार । अश्रु सात्विक । व्रीडा संचारी भाव । प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । मरणाक्षेप । प्रस्थानसे निवृत्त हुए नायकसे किसीने पूंछा कि तुम किस कामके लिये लौटे । उत्तरमें नायकने यह कारण बताया कि " रोती हुई प्रियाने हँसकर यह सूचित किया कि मैं तो वियोगसे मर जाऊंगी, फिर तुम किससे मिलोगे " यहां कार्यके प्रस्तुत होनेपर कारणके कहनेसे (हेतुनिबंधन) अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार है, यथा–

अप्रस्तुत वृत्तान्त महँ, जहँ अस्तुतकौ ज्ञान ।
अप्रस्तुत परसंससो, पंच प्रकार प्रमान ॥
इक सारूप्य निबंधना, द्वय सामान्यनिबंध ।
बहुरि विशेष्यनिबंधना, कहि कवि रचत प्रबंध ॥
चौथे हेतुनिबंधना, काजनिबंधन आन ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

धीरं वारिधरस्य वारि किरतः श्रुत्वा निशीथे ध्वनिं दीर्घोच्छ्वासमुदश्रुणा विरहिणीं बालां चिरं ध्यायता ॥ अध्वन्येन विमुक्तकण्ठम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खिलं रात्रिं तथाक्रंदितं ग्रामीणैर्व्रजतो जन-
स्य वसतिर्ग्रामे निषिद्धा यथा ॥ ११ ॥

आधी रातको पानी बरसाते मेघकी गंभीर गर्जना सुनकर आंसू टपकाते तथा विरहिणी बालाका लम्बे २ सांस लेकर निरन्तर ध्यान करते पथिकने रातभर जो खोलकर ऐसा रोदन किया कि गामवालोंने फिर किसी पथिकके गाममें उतरनेका निषेध कर दिया ॥ ११ ॥

कविकी उक्ति। प्रवास विप्रलंभ शृंगार। स्मृति संचारी भाव। विरही नायक। अश्रु सात्विक। मेघशब्द उद्दीपनाविभाव। मेघकी गर्जनागुणसे पथिकने रोना अवगुण धारण किया, इस लिये उल्लास अलंकार यथा—

गुण औगुण जब औरके, और धरै उल्लास।

मेघकी गर्जना सुखद है, उसके दुःखद होनेसे व्याघात अलंकार यथा—

सो व्याघात जु औरतें, कीजै कारज और।
बहुरि विरोधीतें जबै, काज लाइये ठौर ॥

एक अन्य पथिकके रोनेसे और सब पथिकोंका ठहरना बंद हो जानेसे प्रथम असंगति अलंकार। शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

कथमपि सखि क्रीडाकोपाद्व्रजेति मयोदिते
कठिनहृदयस्त्यक्त्वा शय्यां बलाद्गत एव सः ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इति सरभसं ध्वस्तप्रेम्णि व्यपेतघृणे जने
पुनरपि हतव्रीडं चेतः प्रयाति करोमि किं ॥ १२ ॥

हे सखि, मैंने किसी प्रकार प्रणयकोपसे "दूर हो" यों कहा तब वह कठिनहृदय शय्याको छोडकर चलाही गया। इस भांति एक साथ प्रेम छोडनेंवाले निःशंक जनके पास मेरा निर्लज्ज मन फिरभी जाता है। क्या करूं ? ॥ १२ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे। प्रणयमानात्मक विप्रलंभ शृंगार। उत्सुकता, दीनता व्यभिचारी भाव। कलहांतरिता नायिका। यहां पतिके छोड जानेके दोषपरभी किसी गुणसे उसके मिलनेकी अभिलाषा करनेसे अनुज्ञा अलंकार है, यथा—

होत अनुज्ञा चाहतें, दोषहि गुण ठहराय।

नायिकाके अल्प कोपवचनसेही नायकके चले जानेसे द्वितीय विशेष अलंकार, यथा—

है विशेष त्रय भांतिकौ, अनाधार आधेय।
थोरेही आरंभतें, फल पावै जहँ भूर ॥
एक वस्तुकौ कीजिये, वरनन ठौर अनेक।

हरिणीछंद ॥

दम्पत्योर्निशि जल्पतोर्गृहशुकेनाकर्णितं यद्वचस्तत्प्रातर्गुरुसन्निधौ निगदतस्तस्योपहारं वधूः ॥ कर्णालंबितपद्मरागशकलं विन्यस्य चंचूपुटे व्रीडार्त्ता प्रकरोति दाडिमफलव्याजेन वाग्बन्धनम् ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रातको दंपतीके बातें करनेमें जो वचन घरके तोतेने सुना था उसे वह सबेरे बडे बूढोंके सामने कहने लगा। उसे सुनकर बहू लज्जासे व्याकुल हो, कानमें लटकते पद्मरागके टुकडेको अनारके दानेके बहाने चोंचके आगे उपहार रखकर उसकी वाणीको रोकती है ॥ १३ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे। संभोग शृंगार। व्रीडा संचारी भाव। नायिका स्वकीया यथा–

विनयार्जवादियुक्ता गृहकर्मरता पतिव्रता स्वीया।

छलसे कार्य साधनेसे पर्यायोक्ति। मर्म छुपानेके लिये पद्मरागशकल सामने रख शुकका वंचन करनेसे युक्तिअलंकार, यथा–

युक्तिः परातिसंधानं क्रियया मर्मगुप्तये।

शार्दूलविक्रीडित छंद। समानभाव, यथा–

दंपति राति करीं बतियां मिलि निर्जन भौन सुवा सुनि लीनी।
आगे गुरूनके प्रात लग्यौ कहने घटना सबसों रँगभीनी ॥
जानि बहू कनफूलसों तोडिकै सौन मनीकी कनी रख दीनी।
चोंचपै दाडिमके छलसों अरु रोकि दई शुकबानि नवीनी ॥

अज्ञानेन पराङ्मुखीं परिभवादाश्लिष्य मां
दुःखितां किं लब्धं चटुल त्वयेह नयता
सौभाग्यमेतां दशाम् ॥ पश्यैतद्दयितारति-
व्यकरोन्मृष्टाङ्गरागारुणं वक्षस्ते मलतैलप-
ङ्कशबलैर्वेणीपदैरङ्कितम् ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे धूर्त ! अपमानके कारण मुख फेरकर खडी हुई दुखियाका मेरा विना जाने आलिंगन कर अपने सौभाग्यको इस दुर्दशाको पहुँचानेसे तुझे क्या मिला ? देख, (मेरी सपत्नी) दयिताके सुरतव्यापारमें पुछे हुए अंगरागसे लाल तेरे वक्षःस्थलपर मलिन तैलरससे चित्रित मेरे केशोंके निशान हो गये हैं ॥१४॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । असूया संचारी भाव । प्रौढा धीरा खंडिता नायिका, यथा–

प्रगल्मा यदि धीरा स्याच्छन्नकोपाकृतिस्तदा ।
उदास्ते सुरते तत्र दर्शयन्त्यादरान् वहिः ॥
पार्श्वमेति प्रियो यस्या अन्यसंभोगचिह्नितः ।
सा खंडितेति कथिता धीरैरीर्ष्याकषायिता ॥

धृष्ट नायक । अंगरागसे लाल वक्षःस्थल होनेसे अन्य स्त्रीके साथ सुरतका समर्थन हुआ, इससे काव्यलिंग अलंकार है शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

एकत्रासनसंस्थितिः परिहृता प्रत्युद्गमाद्दूर-
तस्ताम्बूलानयनच्छलेन रभसाश्लेषोऽपि सं-
विघ्नितः ॥ आलापोऽपि न विश्रुतः परिजनं
व्यापारयन्त्यान्तिके कान्तं प्रत्युपचारतश्च-
तुरया कोपः कृतार्थीकृतः ॥ १८ ॥

दूरसेही उठकर आसनपर साथ बैठने न दिया, ताम्बूल लानेके बहाने गाढ आलिंगनभी न होने दिया तथा परिजनोंको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकट बताकर कुछ बातभी नहीं सुनी, इस भांति पतिका उपचार करके चतुर नायिकाने कोप सार्थक किया ॥ १५ ॥

सखीकी युक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । अवहित्थ व्यभिचारी भाव । प्रौढा धीरा नायिका । धर्मसादृश्यसे क्रोध तथा आदरमें भेद न प्रतीत होनेसे मीलित अलंकार यथा—

धर्मसाम्याद्भेदाप्रतीतिर्मीलितम् ।

युक्तिअलंकारभी है । औदार्य नाट्यालंकार, यथा—

औदार्यं विनयः सदा ।

शार्दूलविक्रीडित छंद । समानभाव, यथा—

आसनतें उठि दूरसों कामिनि नेकु न आपुन संग बिठायौ ।
लानकी पान बना बतियां छलसों न अलिंगन गाढ करायौ ॥
पास बताइ कुटुंबके लोगन कानके ऊपर हाथ जमायौ ।
यों उपचारसों मानिनि सन्मुख कंत कृतारथ कोप बनायौ ॥

दृष्ट्वैकासनसंस्थिते प्रियतमे पश्चादुपेत्यादरादेकस्या नयने पिधाय विहितक्रीडानुबंधच्छलः ॥ ईषद्वक्रितकन्धरः सपुलकः प्रेमोल्लसन्मानसामन्तर्हासलसत्कपोलफलकां धूर्तोऽपरां चुम्बति ॥ १६ ॥

एक आसनपर बैठी हुई दो प्रियतमाओंको देखकर यत्नपूर्वक पीछेसे आकर, एकके नेत्र हाथसे मूंदकर, धूर्त, क्रीडा

20075

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनेके बहाने, गरदनको कुछ टेढी करके, रोमांचित हो, प्रीतिसे प्रफुल्लित चित्तवाली तथा अन्तर्गत हाससे शोभित कपोलमंडलवाली दूसरीका चुंबन करता है ॥ १६ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोगशृंगार । हर्षसंचारी भाव । रोमांच सात्विक । ज्येष्ठाकनिष्ठावर्णन, यथा—

वरणत ज्येष्ठ कनिष्ठका, जहँ व्याही तिय दोय ।
पिय प्यारी जेठा कही, अनप्यारी लघु सोय ॥

दक्षिणनायक, यथा—

बहुनारिनको सुखदसम, सो दक्षिण पति जान ।

छलसे इष्ट साधन करनेसे पर्यायोक्ति अलंकार । जाति-अलंकारभी है ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द । समान भाव, यथा—

दोऊ छवि छाजतीं छबीली मिलि आसनपै जिनहिं विलोकि रह्यौ जात न जितै जितै । कहें पद्माकर पिछोहे आइ आदरसों छलिया छवीलो छैल बासर बितै बितै ॥ मूंदे तहां एक अलबेलीके अनोखे दृग सुदृग मिचाउनीके ख्यालन हितै हितै । नेसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्य दूसरीकौ औचक अचूक मुख चूमति चितै चितै ॥

चरणपतनप्रत्याख्यानात्प्रसादपराङ्मुखे नि-
भृतकितवाचारेत्युक्त्वा रुषा परुषीकृते ॥
व्रजति रमणे निःश्वस्योच्चैः स्तनस्थितहस्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या नयनसलिलच्छन्ना दृष्टिः सखीषु निवेशिता॥ १७ ॥

चरणोंमें पड़नेपर हटा देनेसे तथा "गूढ शठचारित" कहनेसे अप्रसन्न और क्रोधसे कर्कश होकर पतिके चले जानेपर लम्बे सांस लेकर और स्तनोंपर हाथ रखकर नायिकाने आंसूभरी दृष्टि सखियोंपर गेरी ॥ १७ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । अश्रु सात्विक । कलहान्तरिता नायिका । यहां विषादका उदय रसका अंग है, इस कारण भावोदय है, यथा—

भावोदयः परांगं चेद्भावोदय इतीरितः ।

स्तनोंपर हाथ रखकर सखियोंसे विरहवेदना असहन होनेका संकेत करनेसे सूक्ष्म अलंकार, यथा—

कौनौ भाव प्रभावतें, जाने जियकी बात ।
इंगिततें आकारतें, कहि सूक्षम अवदात ॥

दीना दृष्टि है, यथा—

अर्धस्रस्तोत्तरपुटा छन्नतारा जलाविला ।
मन्दसंचारिणी दृष्टिर्दीनेति परिकीर्त्यते ॥

हरिणी छन्द ॥

कांच्या गाढतरावबद्धवसनप्रान्ता किमर्थं पुनर्मुग्धाक्षी स्वपितीति तत्परिजनं स्वैरं प्रिये पृच्छति ॥ मातः स्वपुमपीह वारयति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मामित्याहितक्रोधया पर्य्यस्य स्वपिति
च्छलेन शयने दत्तोऽवकाशस्तया ॥ १८॥

जब पतिने परिजनसे पूंछा कि " यह वामलोचना मेखलासे वस्त्रको दृढ बांधकर क्यों सोती है ? " तब " मैया, मुझे सोनेभी नहीं दें " यों कहकर मानिनीने सोनेके बहाने करवट लेकर शय्यापर पतिको स्थान दिया ॥ १८ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । प्रणयमानात्मक विप्रलंभशृंगार संभोगशृंगारमें बदल गया है । अवहित्थ संचारी भाव । करवटके बहाने पतिको स्थान देनेका संकेत करनेसे सूक्ष्म अलंकार । मानके कारण शयन करना प्रकट होनेपरभी नायिकाके, अपनी उक्तिसे उसे छुपानेसे व्याजोक्तिअलंकार, यथा–

उद्भिन्नवस्तु निगूहनं व्याजोक्तिः ।

पर्यायोक्तिभी है । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

एकस्मिन् शयने पराङ्मुखतया वीतोत्तरं
ताम्यतोरन्योन्यस्य हृदि स्थितेऽप्यनुनये
संरक्षतोर्गौरवम् ॥ दम्पत्योः शनकैरपाङ्गव-
लनान्मिश्रीभवच्चक्षुषोर्भग्नो मानकलिः स-
हासरभसं व्यासक्तकण्ठग्रहः ॥ १९ ॥

एक शय्यापर पराङ्मुख होनेसे उत्तर देना बंद करके दुःख पाते तथा हृदयमें प्रेम होनेपरभी परस्पर मान करते दंपतीने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीरे २ आंखोंके कोने मुडनेसे दृष्टि मिलनेपर हाससहित हर्षसे आलिंगन करके मानकलह छोड दिया ॥ १९ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार स्पर्शनात्मा संभोगशृंगारमें बदल गया है । हर्ष, उत्सुकता संचारीभाव । कोपशांति शृंगारका अंग होनेसे समाहित अलंकार यथा–

भावशांतिः परांगं चेत्समाहितमलंकृतिः ।

विना यत्न उत्कंठित अर्थकी सिद्धि होनेसे प्रहर्षण, यथा–

उत्कंठितार्थसंसिद्धिर्विना यत्नं प्रहर्षणम् ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द । समानभाव यथा–

खिचे मान अपराधते, चलिगे बढे अचैन ।
जुरत दीठि तजि रिस खिसी, हँसे दुहुनके नैन ॥
(बिहारीसतसई)

पश्यामो मयि किं प्रपद्यत इति स्थैर्यं मया
लम्बितं किं मां नालपतीत्ययं खलु शठः कोप-
स्तयाप्याश्रितः ॥ इत्यन्योन्यविलक्षदृष्टिच-
तुरे तस्मिन्नवस्थान्तरे सव्याजं हसितं मया
धृतिहरो बाष्पस्तु मुक्तस्तया ॥ २० ॥

" देखूं, यह मेरा क्या करती है " यों सोचकर मैं निर्व्या-पार हो गया, " यह धूर्त क्यों मुझसे नहीं बोलता " यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोच उसनेभी क्रोधका आसरा लिया। इस भांति आपसकी विलक्ष दृष्टिसे सुभग उस अवसरमें मैं छलसे हँस दिया और उसने अधीरतासूचक आंसू डाला ॥ २० ॥

नायककी उक्ति सखासे। प्रणयमानात्मक विप्रलंभ शृंगार। उत्सुकता संचारी भाव । अश्रु सात्विक। मुग्धा नायिका।

अनुकूल नायक, यथा–

निजपतनीमें रत सदा, सो अनुकूल बखान।

कोपशांति शृंगारका अंग होनेसे समाहित। मान न रहनेका वर्णन छोड उसके कारणका वर्णन करनेसे अप्रस्तुत प्रशंसा। नायकके मान करनेपर नायिकाकेभी मान करनेसे अन्योन्य अलंकार, यथा–

अन्योन्यालंकार है, अन्योन्यहि उपकार।

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

परिम्लाने माने मुखशशिनि तस्याः करधृते
मयि क्षीणोपाये प्रणिपतनमात्रैकशरणे ॥
तया पक्ष्मप्रान्तव्रजपुटनिरुद्धेन सहसा प्रसादो
बाष्पेण स्तनतटविशीर्णेन कथितः ॥ २१ ॥

---

१ गंभीर " विलखना = शोकमग्न होना और गंभीरभाव धारण करना, अर्थात् हर्ष शोकादिका न प्रकाश करना "
(डाक्टर ग्रियर्सन)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब उसका मान स्वयं शिथिल हो गया, मुखचन्द्रको उसने हाथके सहारे रख लिया, मेरे सब उपाय निष्फल हो गये और केवल प्रणिपातकाही मुझे आसरा रह गया तब उसने पलकोंके प्रान्तपुटमें रुके हुए और सहसा स्तनतटपर छिन्न भिन्न हुए अश्रुजलसे प्रसन्नता प्रकट की ॥ २१ ॥

नायककी उक्ति सखासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । चिन्ता संचारी भाव । अश्रु सात्विक । मध्यमा नायिका यथा–

पियादोष लखि मध्यमा, करै मान सन्मान ।

माधुर्यनाटचालंकार, यथा–

सर्वावस्थाविशेषेषु माधुर्यं रमणीयता ।

कोपशांति रसका अंग होनेसे समाहित । नायिकाका कोप शांत हेनेसे प्रसादन सुगम हो गया इसलिये समाधि अलंकार है, यथा–

सो समाधि कारज सुगम, और हेतु मिलि होत ।

अश्रुजलसे क्रोध प्रकट न कर प्रसन्नता प्रकट करनेसे व्याघात । 'मुखचन्द्र' यह 'समस्त रूपक' है, यथा–

उपमैव तिरोभूतभेदारूपकमुच्यते ।

यथा बाहुलता, पाणिपद्मं, चरणपल्लवः । गुरुमानमोचन, यथा–

सहजै हांसी खेलमें, विनय वचन सुनि कान ।
पायं परे पियके छुटे, लघु मध्यम गुरु मान ॥

शिखरिणी छन्द ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तस्याः सान्द्रविलेपनस्तनतटप्रश्लेषमुद्राङ्कितं किं वक्षश्चरणानतिव्यतिकरव्याजेन गोपाय्यते ॥ इत्युक्ते क्व तदित्युदीर्य सहसा तत्संप्रमार्ष्टुं मया साश्लिष्टा रभसेन तत्सुखवशात्तन्व्यापि तद्विस्मृतम् ॥ २२ ॥

" उस (मेरी सपत्नी) के घने विलेपनयुक्त स्तनयुगकी आश्लेषमुद्रासे चिह्नित वक्षःस्थलको क्यों चरणोंमें प्रणाम करनेके बहाने छुपाते हो ? " उसके यों कहनेपर " कहां है ? " यह सहसा कहकर उसे पोंछनेके लिये मैंने हर्षसे उसका आलिंगन किया और आलिंगनके सुखके वशीभूत होकर वह तन्वीभी उसे भूल गई ॥ २२ ॥

नायककी उक्ति सखासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार संभोगशृंगारमें बदल गया है । हर्ष संचारी भाव । कोपशांति रसका अंग होनेसे समाहित । नायिका प्रौढा धीराधीरा खंडिता यथा-

धीराधीरा तु सोल्लुंठभाषितैः खेदयेदमुम् ।

धृष्टनायक । रसान्तर उपायका प्रयोग यथा-

रभसत्रासहर्षादेः कोपभ्रंशो रसान्तरम् ।

यहां सुरतके चिह्नोंके अनुभवमें आलिंगनसे विघ्न होनेके कारण व्यासंग अलंकार है यथा-

अनुभवस्मृत्यादेरन्यासंगात्प्रत्यूहो व्यासंगः ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपना अपराध छुपानेके लिये चरणोंमें प्रणाम और आलिं-गन आदि हेतु तथा अपराध भूलना कार्य दोनोंके कहनेसे हेतु अलंकार यथा—

हेतुसहित कारज जहां कहें हेतु कविराज ।

पर्यायोक्तिभी है । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

त्वं मुग्धाक्षि विनैव कञ्चुलिकया धत्से मनो-
हारिणीं लक्ष्मीमित्यभिधायिनि प्रियतमे
तद्वीटिकासंस्पृशि ॥ शय्योपान्तनिविष्टस-
स्मितसखीनेत्रोत्सवानन्दितो निर्यातः शन-
कैरलीकवचनोपन्यासमालीजनः ॥ २३ ॥

"हे मुग्धाक्षि ! विना चोलीकेभी तुम मनोहारिणी शोभा धारण करती हो" यों कहकर प्रियतमने जब उसकी गांठ छुई तब शय्याके निकट बैठी हुई मुसकुराती नायिकाके नयन-संकेतसे आनंदित होकर सखियां कपटवचन कहतीं बाहर चली गईं ॥ २३ ॥

सखीका वचन सखीसे । संभोगश्रृंगार । अनुकूल नायक । स्वाधीनपतिका मध्या नायिका यथा—

केशव जाके गुण बंध्यौ, सदा रहै पति संग ।
स्वाधिनपतिका तासुकौ, वरणत प्रेम प्रसंग ॥

हर्ष, उत्सुकता संचारी भाव । कान्तिनाट्यालंकार, यथा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैव कान्तिर्मन्मथाप्यायिता द्युतिः ।

शोभा नाटचालंकार, यथा—

रूपयौवनलालित्यभोगाद्यैरंगभूषणं, शोभा प्रोक्ता ।

बिना चोलीके शोभा धारण करनेसे प्रथम विभावना, यथा—

होत छ भांति विभावना, कारन विनही काज;
हेतु अपूरनतें जबै, कारज पूरन होइ;
प्रतिबाधकहू होत है, कारज पूरन मानि;
जबै अकारन वस्तुते, कारज प्रकटहि होत;
काहू कारनतें जबै, कारज होत विरुद्ध;
पुनि कछु कारजतें जबै, उपजै कारणरूप ।

पर्यायोक्तिभी है । विच्छित्तिहाव, यथा

विच्छिति काहू वेरमें, भूषण अलप सुहाइ ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ तुलनार्थ—

पतिरतिकी बतिया कही, सखी लखी मुसकाय ।
कै कै सबै टलाटली, अलीं चलीं सुख पाय ॥

(बिहारीसतसई)

भ्रूभङ्गे रचितेऽपि दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते कार्कश्यं गमितेऽपि चेतसि तनू रोमाञ्चमालम्बते ॥ रुद्धायामपि वाचि सस्मितमिदं दग्धाननं जायते दृष्टे निर्वहणं भविष्यति कथं मानस्य तस्मिञ्जने ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भ्रुकुटि टेढी करने परभी दृष्टि उसे अधिक उत्कंठासे देखती है, वाणी रोकने परभी यह दग्ध मुख मुसकुराने लगता है, चित्तको कठिन करने परभी शरीर रोमांचित हो जाता है, उस मनुष्यको देखने पर मानका निर्वाह कैसे होगा ? ॥ २४ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । उत्कंठिता नायिका यथा–

पिय सहेट पावे नहीं, चिंता मनमें आनि ।
सोच करै संतापसों, उत्कंठिता बखानि ॥

उत्सुकता, स्मित, हर्ष संचारी भाव । हर्षके विरुद्ध कारणोंसेभी हर्ष कार्य होनेसे व्याघात । हर्षका कारण न होनेपरभी हर्ष होनेसे विभावना । यत्नाक्षेप, यथा–

यत्नाक्षेपः स यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥
गच्छेति वक्तुमिच्छामि त्वत्प्रियं मत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥

दग्ध, हतक शब्द कहना स्त्रियोंका स्वभाव होता है । इसका कादंबरीमें अनेक वार प्रयोग हुआ है यथा–

" क्व वानेन दग्धहृदयेन गृहीता गच्छामि " ।

'जला' 'मरा' कहनेकी अबतक स्त्रियोंकी प्रवृत्ति है । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ तुलनार्थ–

नाम सुनतही ह्वै गयौ, तन औरै मन और ।
दबै नहीं चित चढि रह्यौ, अबै चढाये त्यौर ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सतर भौंह रूखे वचन, करत कठिन मन नीठि ।
कहा कहौं है जाति हरि, हेरि हँसौंही दीठि ॥
दहैं निगोडे नैन ये, गहें न चेत अचेत ।
हौं कसिकै रिसका करों, ये निरखें हँसि देत ॥
(बिहारीसतसई)

कान्ते कत्यपि वासराणि गमय त्वं मीलयित्वा दृशौ स्वस्ति स्वस्ति निमीलयामि नयने यावन्न शून्या दिशः ॥ आयाता वयमागमिष्यति सुहृद्वर्गस्य भाग्योदयैः सन्देशो वद कस्तवाभिलषितस्तीर्थेषु तोयांजलिः ॥ २८ ॥

नायक–हे कांते ! तुम आंखें मीचकर कुछ दिन बिता दो. नायिका–स्वस्ति, तुम्हारा कल्याण हो, जबतक दिशा शून्य नहीं होतीं तबतक मैं नेत्र मूंदे लेती हूं (अर्थात् जबतक तुम अदृष्ट नहीं होगे तबतकही मैं प्राण त्याग करके नेत्र मूंद लूंगी क्योंकि जिसका प्रिय पास न हो उसे संसार शून्य लगता है.) नायक–हम तो आ गये. नायिका–मित्रोंके भाग्योदयसे आओगे. नायक–तुम्हारा अभिलाषित संदेश क्या है ? कहो. नायिका–तीर्थोंमें जलकी अंजलि (क्योंकि मैं तुम्हारे विरहमें मर जाऊंगी, फिर अंजलि देदेना) ॥ २८ ॥

---

१ उत्तर रामचरितमें रामचन्द्रजीकी उक्ति–
शून्यं मन्ये जगदविरतज्वालमन्तर्ज्वलामि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रवास विप्रलंभशृंगार । विषाद संचारी भाव । अभिसारित्रा नायिका । यथा—

अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा ।
स्वयं वाऽभिसरत्येषा धीरैरुक्ताऽभिसारिका ॥

मरणाक्षेप, यथा—

मरन निवारन करत जहँ, काज निवारन होत ।
जानहु मरणाक्षेप कवि, जे जिय बुद्धि उदोत ॥

द्वितीय उत्तर अलंकार, यथा—

प्रत्युत्तर जहँ होइ, उत्तर दूजौ सोइ ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

सा पत्युः प्रथमापराधसमये सख्योपदेशं
विना नो जानाति सविभ्रमांगवलनावक्रोक्ति-
संसूचनम् ॥ स्वच्छैरच्छकपोलमूलगलितैः
पर्यस्तनेत्रोत्पला बाला केवलमेव रोदिति
लुठल्लोलालकैरश्रुभिः ॥ २६ ॥

वह पतिके पहले अपराधके समय, सखीने सिखाया नहीं इस कारण, विलासपूर्वक अंग मोडना और वक्रोक्ति कहना नहीं जानती है । निर्मल कपोलोंके मूलमें गिरते हुए, चंचल अलक जिनमें इधर उधर लग गये हैं ऐसे स्वच्छ आंसुओंसे भरे नेत्र-कमलवाली वह बाला केवल रोती है ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । अश्रु सात्विक । मुग्धा खंडिता नायिका । जातिअलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ तुलनार्थ–

लाल तुम्हें कहूं और तियाकी लख्यौ अंगियामें लगावति चोवे ।
ता छिनतें मतिराम न खेलति बूझै सखीनहुके दुख गोवे ॥
लिखै करके नखसों पगके नख शीश नवायकै नीचैही जोवे ।
नारि नवेली न रूसनौ जानति भीतर भौन मसूसनि रोवे ॥

भवतु विदितं भव्यालापैरलं प्रिय गम्यतां तनुरपि न ते दोषोऽस्माकं विधिस्तु पराङ्मुखः ॥ तव यदि तथाभूतं प्रेम प्रपन्नमिमां दशां प्रकृतितरले का नः पीडा गते हतजीविते ॥ २७ ॥

हे प्रिय ! हुआ, बातें मत बनाओ, जाओ, मैंने सब जान लिया है, तुम्हारा जराभी दोष नहीं है, हमाराही दैव पराङ्मुख है, जब तुम्हारे इतने बढे हुए प्रेमकी यह दशा हो गई तब हमारे प्रकृतिसे चंचल, निन्दित जीवनके जानेसे तुमें क्या व्यथा होगी ? ॥ २७ ॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे । खंडिता नायिका । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । शृंगारमें उसके प्रतिकूल शान्त-

---

१ यहां वक्रोक्ति है । आशय यह है कि तुम्हारा सब दोष है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रसके, जीवनकी प्राकृतिक चंचलता सूचक, उद्दीपन विभाव, विभाव और निर्वेद व्यभिचारीभावका समावेश अनुचित है। यहां अन्तर्गति प्रीतिके अनुकूल भाषण होनेसे भाव अलंकार है, यथा—

अभिप्रायानुकूल्येन प्रवृत्तिर्भाव उच्यते ।

हरिणी छन्द । तुलनार्थ—

समारूढा प्रीतिः प्रणयबहुमानादनुदिनं ।
व्यलीकं वीक्ष्येदं कृतमकृतपूर्वं खलु मया ॥
प्रिया मुञ्चत्यद्य स्फुटमसहना जीवितमहो ।
प्रकृष्टस्य प्रेम्णः स्खलितमविषह्यं हि भवति ॥

(रत्नावलीनाटिका)

उरसि निहितस्तारो हारः कृता जघने घने
कलकलवती कांची पादौ क्वणन्मणिनूपुरौ ।
प्रियमभिसरस्येवं मुग्धे त्वमाहतडिण्डिमा
यदि किमधिकत्रासोत्कम्पं दिशः समुदी-
क्षसे ॥ २८ ॥

छातीपर मोतियोंका बडा हार पहना है, घन नितंबमें कलकल करती तागडी लटकाई है, चरणोंमें मणि, नूपुर शब्द कर रहे हैं. हे सुंदरि ! यदि तू इस प्रकार डंका बजाती प्रियके पास जाती है तो फिर भयसे कांपती दिशाओंकी ओर क्यों देखती है ? ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृद्ध कुलटाकी उक्ति अभिसारिकासे । संभोगशृंगार । कम्प सात्विक । वेश्या अभिसारिका, यथा–

विचित्रोज्ज्वलवेशा तु वलन्नूपुरनिस्वना ।
प्रमोदस्मेरवदना स्याद्वेश्याऽभिसरेद्यदि ॥

भयका कारण न होनेपर भय होनेसे विभावना । हरिणी छन्द ॥

प्रातः प्रातरुपागतेन जनिता निर्निद्रता चक्षु-षोर्मंदनायां मयि गौरवव्यपगमादुत्पादितं लाघवम् ॥ किं मुग्धेन मया कृतं रमण धीर्मुक्ता त्वया गम्यतां दुःस्थं तिष्ठसि यच्च पथ्यम-धुना कर्त्तास्मि तच्छ्रोष्यसि ॥ २९ ॥

नायिका–तुम्हारे प्रतिदिन प्रातःकाल आनेसे मेरे नेत्रोंकी नींद जाती रही (क्योंकि सबेरेतक तुम्हारी राह देखनी पडती है), और गौरव न रहनेसे तुमने मुझ दुखियाको तुच्छ बना दिया । नायक–मुझ मूढने क्या किया ? नायिका–हे कान्त ! तुम बुद्धिहीन हो गये हो, जाओ, तुमें यहां ठहरनेमें कष्ट होता है । अब जो पथ्य मैं लूं उसे तुम सुन लेना (अर्थात् मैं प्राण त्याग करूंगी) ॥ २९ ॥

ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । विषाद, असूया संचारी भाव । प्रौढा धीराधीरा खंडिता नायिका ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मरणक्षेपका आभास । दूसरा उत्तर अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

सा बाला वयमप्रगल्भमनसः सा स्त्री वयं कातराः सा पीनोन्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते सखेदा वयम् ॥ साक्रान्ता जघनस्थलेन गुरुणा गन्तुं न शक्ता वयं दोषैरन्यजनाश्रितैरपटवो जाताः स्म इत्यद्भुतम् ॥ ३० ॥

वह बाला है और हमारे मुखसे बात नहीं निकलती, वह स्त्री है और हम व्याकुल हैं, वह पीन और उन्नत स्तनयुगलको धारण करती है और हमें थकावट मालूम होती है वह भारी नितंबसे घिरी हुई है और हम चल नहीं सकते, यह अद्भुत बात है कि अन्यके आश्रित दोषोंसे (अर्थात् गुणोंसे) हम असमर्थ हो गये हैं । (वास्तवमें तो उसे अप्रगल्भ, कातर, खेदयुक्त और असमर्थ होना चाहिये) ॥ ३० ॥

विरही नायककी उक्ति । विप्रलंभशृंगार । जडता, त्रास, भ्रम, ग्लानि क्रमसे व्यभिचारी भाव । बिरहकी प्रलापदशाका वर्णन यथा—

विरही जन जहँ कहत कछु, निरखि निरर्थक बैन ।
तासों कहत प्रलाप हैं, कवि कविताके ऐन ॥

कारण एकमें और उसका कार्य दूसरेमें होनेसे प्रथम असंगति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रस्थानं वलयैः कृतं प्रियसखैरस्रैरजस्रं गतं धृत्या न क्षणमासितं व्यवसितं चित्तेन गन्तुं पुरः ॥ यातुं निश्चितचेतसि प्रियतमे सर्वे समं प्रस्थिता गन्तव्ये सति जीवित प्रियसुहृत्सार्थः किमु त्यज्यते ॥ ३१ ॥

प्रियतमके (देशांतर) जानेका निश्चय मनमें कर लेनेपर सबने उसके साथ प्रस्थान किया, प्रियके सहचर कंकण चलते बने (अर्थात् चिन्ताके कारण शरीर कृश हो जानेसे हाथोंमेंसे खिसल पडे), आंसू निरन्तर वहते चले, धैर्य क्षणभरभी न ठहरा, मन आगे जानेको उतारू हुआ; हे जीवन, ! तुझेभी जाना जरूर है इसलिये अपने प्रिय मित्रोंके समूहको क्यों छोडता है ? ॥ ३१ ॥

नायिकाकी उक्ति । प्रवास विप्रलंभश्रृंगार । मध्या प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । अश्रु सात्विक । निर्वेद संचारी भाव । कंकणादिका प्रियतमके साथ जाना वर्णन करनेसे सहोक्ति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ तुलनार्थ–

सवैया–वात चली यह है जबतें तबतें चले कामके तीर हजारन।
नींद औ भूंख चली तनतें अंसुवा चले नैनानितें तजि धारन ॥
दास चली करतें वलया रसना चली लंकतें लागी अवारन ।
प्रानके नाथ चले अनतैं तनतें नाहिं प्रान चले केहि कारन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संदष्टाधरपल्लवा सचकितं हस्ताग्रमाधुन्वती
मा मामुंच शठेति कोपवचनैरानर्त्तितभ्रूलता ॥
सीत्कारांचितलोचना सरभसं यैश्चुम्बिता
मानिनी: प्राप्तं तैरमृतं मुधैव मथितो मूढैः
सुरैः सागरः ॥ ३२ ॥

अधर पल्लवके खंडित करनेपर चकित होकर हाथको चारों ओर हिलाती, " शठ, मुझे छोड " यों कोपवचन कहकर भ्रुकुटि-लताको नचाती, और सीत्कारपूर्वक आंखें मीचती मानिनीका जिन्होंने वेगसे चुम्बन किया उन्होंने अमृत पाया, मूढ देवता-ओंने समुद्रको वृथाही मथा ॥ ३२ ॥

कविकी उक्ति । यहां प्रणयमानात्मक विप्रलंभश्रृंगारका संभोगश्रृंगारमें पर्यवसान हो गया है । हर्ष संचारी भाव । शठ नायक । समुद्रका मथन वृथा बताकर मानिनीके मुखचुं-बनमें अमृत पाना ठहरानेसे परिसंख्यागर्भित काव्यलिंग अलं-कार । किलकिंचित तथा कुट्टमित नाट्यालंकार यथा—

क्रोध हर्ष अभिलाष भय, किलकिंचितमें होइ ।
प्रगट करै दुख सुख समय, हाव कुट्टमित सोइ ॥

शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ—

सत्कविरसनासूर्पी निस्तुषतरशब्दशालिपाकेन ।
तृप्तो दयिताधरमपि नाद्रियते का सुधादासी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

**सुप्तोऽयं सखि सुप्यतामिति गताः सख्यस्त-
तोऽनन्तरं प्रेमावेशितया मया सरलया न्यस्तं
मुखं तन्मुखे ॥ ज्ञातेऽलीकनिमीलने नयनयो-
र्धूर्तस्य रोमाञ्चतो लज्जासीन्मम तेन साप्य-
पहृता तत्कालयोग्यैः क्रमैः ॥ ३३ ॥**

" हे सखि ! यह सो गया, तूभी सो " यों कहकर सखियां चली गईं । इसके अनन्तर प्रेमके वशीभूत होकर मुझ सरलाने अपना मुख उस (नायक) के मुखपर रक्खा । फिर उस धूर्तके रोमांचित हो जानेसे मैंने जाना कि उसने झूंठेको आंखें मीच ली थीं और मुझे शरम आई पर उसने तत्कालोचित व्यापारसे उसेभी हर लिया ॥ ३३ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । संभोगशृंगार । रोमांच सात्विक । एकान्त स्थान उद्दीपन विभाव । उत्सुकता संचारी भाव । नायकके सो जानेका भ्रम होनेसे भ्रान्ति अलंकार । सोनेके बहाने क्याका संभोग साधन करनेसे पर्यायोक्ति । शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ—

मैं मिसहा सोयौ समुझि, मुँह चूम्यौं ढिग जाय ।
हँस्यौ खिसानी गर गह्यौ, रही गरै लपटाय ॥

**कोपो यत्र भ्रुकुटिरचना निग्रहो यत्र मौनं
यत्रान्योन्यस्मितमनुनयो यत्र दृष्टिः प्रसादः ॥**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तस्य प्रेम्णस्तदिदमधुना वैषमं पश्य जातं त्वं पादान्ते लुठसि नहि मे मन्युमोक्षः खलायाः ३४॥

जिसमें भ्रुकुटिरचनाही कोप था, मौनही ताडना थी, आपसका स्मितही प्रसादन था, दृष्टिपातही प्रसन्नता थी, उसी प्रेममें देखो, अब ऐसा विकार हो गया है कि तुम मेरे चरणोंके निकट लोटते हो और मैं दुष्टा क्रोध नहीं छोडती हूं॥ ३४॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे। ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार। प्रौढा धीराधीरा नायिका। चरणोंमें लोटनेपरभी मान न छोड-नेसे विशेषोक्ति। प्रेमइष्टमें अनिष्ट होनेसे युक्तायुक्त अलं-कार, यथा-

इष्टे बात अनिष्ट जहँ, कैसेहू ह्वै जाय।
तासों युक्तायुक्त कहि, बरनत कवि सुख पाय॥

मन्दाक्रान्ताछन्द, यथा-

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।

अर्थात् म, भ, न, त, त, गण तथा दो गुरु और ४। ६। ७ पर विश्राम॥

सुतनु जहिहि कोपं पश्य पादानतं मां न खलु तव कदाचित्कोप एवंविधोऽभूत्॥ इति निगदति नाथे तिर्यगामीलिताक्ष्या नयन-जलमनल्पं मुक्तमुक्तं न किञ्चित्॥ ३५॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे सुतनु ! मौन छोड, मुझे देख, मैं तेरे चरणोंमें पडा हूं, तूने वास्तवमें ऐसा कोप कभी न किया" पतिके यों कहने पर तिरछे और कुछ मिचे हुए नेत्रवाली नायिकाने आंसुओंकी झडी लगा दी पर कहा कुछ नहीं ॥ ३५ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । मध्या धीराधीरा नायिका । अश्रु सात्विक । गुरु मान । नति उपायका प्रयोग यथा–

अति हितते अति कामते, अति अपराधहि जान ।
पांय परै प्रीतम प्रिया, ताकों प्रणाति बखान ॥

कोपशांति शृंगारका अंग होनेसे समाहित । चरणोंमें पडने-परभी मान न छोडनेसे विशेषोक्ति । मालिनी छन्द, यथा–

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

अर्थात् न, न, म, य, य, गण तथा ८ । ७ पर विराम ॥

गाढालिङ्गनवामनीकृतकुचप्रोद्भिन्नरोमोद्गमा
सान्द्रस्नेहरसातिरेकविगलच्छ्रीमन्नितम्बाम्ब-
रा ॥ मा मा मानद माति मामलमिति
क्षामाक्षरोल्लापिनी सुप्ता किंतु मृता नु किं
मनसि मे लीना विलीना नु किम् ॥ ३६ ॥

गाढ आलिंगनसे दबे हुए जिसके कुच अत्यन्त रोमांचित हो गये और घने स्नेहरसकी अधिकताके कारण जिसका सुंदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नितंबवस्त्र सरक गया ऐसी "नहीं, नहीं, मानद बहुत नहीं मुझे मत (सताओ)" यों अल्प अक्षरोंको कहती नायिका क्या सो गई, क्या मर गई, अथवा क्या मेरे मनमें लीन हो गई या क्या गल गई ? ॥ ३६ ॥

(मानद = मान खंडन करनेवाला) वियोगीकी स्वगत चिन्ता । संभोग शृंगार । रोमांच, स्वरभंग, स्तंभ, प्रलय सात्विक । वचन अनुभाव । हर्ष, उत्सुकता संचारी भाव । प्रौढा नायिका । यहां "सताओ (पीडय)" शब्द न होनेसे न्यूनपदत्व गुण है । हर्षभाव रसका अंग होनेसे प्रेय अलंकार है, यथा-

भावः परस्य चांगं चेत्प्रेयोऽलंकार इष्यते ।

संशय होनेसे संदेह अलंकार, यथा-

स संदेहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः ।

"मर गई" शब्द-सूचित करुण रसका समावेश शृंगारमें अनुचित है, यथा-

त्यक्त्वौग्र्यमरणलस्यजुगुप्साव्यभिचारिणः ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

पटालग्ने पत्यौ नमयति मुखं जातविनया
हठाश्लेषं वाञ्छत्यपहरति गात्राणि निभृतम्॥

---

१ वारणार्थपदगद्गदवाचामीर्ष्यया मुहुरपत्रपया च ।
कुर्वते स्म सुदृशामनुकूलं प्रातिकूलिकतयैव युवानः ॥
(शिशुपालवध)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न शक्नोत्याख्यातुं स्मितमुखसखीदत्तनयना
ह्रिया ताम्यत्यंतः प्रथमपरिहासे नववधूः॥३७॥

प्रथम परिहासके समय नई वधू पति वस्त्र खेंचता है तब, विनयसे नीचा मुख कर लेती है, हठसे आलिंगन चाहतीभी अंगोंको दूसरी ओर ले जाती है, मुसकुराती हुई सखीकी ओर नेत्र कर लेती है, कुछ कह सकती नहीं और लज्जाके कारण मनमें दुख पाती है॥ ३७ ॥

कविकी उक्ति । संभोगशृंगार। व्रीडा संचारी भाव । नवोढा नायिका, यथा-

मुग्धा जहँ भयलाजयुत, रति न चहै पति संग ।
ताहि नवोढा कहत हैं, जे प्रवीन रसरंग ॥

जातिअलंकार । विहृतनाट्यालंकार, यथा-

लाजनि बोलि सकै नहीं, पियहि मिलेहू नारि ।
विहृतहाव तासों सबै, कविजन कहत विचारि ॥

शिखरिणीछन्द । तुल्यनार्थ-

दर्शयन्ती मुखे खेदं मस्खलंती पदे पदे ।
कथंचिन्नीयते शय्यां कथा नववधूरिव ॥
(श्रीहर्षचरित)

गते प्रेमाबन्धे प्रणयबहुमाने विगलिते निवृत्ते
सद्भावे जन इव जने गच्छति पुरः॥ तदुत्प्रे-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्ष्योत्प्रेक्ष्य प्रियसखि गतांस्तांश्च दिवसान्न
जाने को हेतुर्दलति शतधा यन्न हृदयम् ॥ ३८ ॥

स्नेहका बंधन ढीला हो गया, प्रणयका गौरव गल गया, सद्भाव जाता रहा, पति सामने होकर उदासीनके समान चला जाता है, हे प्रियसखि ! इस बातको और उन बीते हुए दिनोंको सोच २ कर, न जानूं क्या कारण है जो हृदयके सौ सौ टुकडे नहीं हो जाते हैं ॥ ३८ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । कलहांतरिता नायिका । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । विषाद, चिंता व्यभिचारी भाव । पूर्ण दुःख पाने परभी छाती न फटनेसे विशेषोक्ति । शिखरिणी छन्द ॥

चिरविरहिणोरत्युत्कण्ठाश्लथीकृतगात्रयोर्नव-
मिव जगज्जातं भूयश्चिरादभिनन्दतोः ॥
कथमपि दिने दीर्घे याते निशामधिरूढयोः
प्रसरति कथा बह्वी यूनोर्यथा न तथा रतिः ३९ ॥

बहुत दिनोंके विरही, रतिकी उत्कंठासे शिथिल शरीरवाले, फिर नयेसे संसारको लक्ष्य करके बहुत कालसे प्रसन्न होते तरुणोंकी किसी प्रकार लंबा दिन बिताकर रात आनेपर,

---

१ क्योंकि वियोगमें उन्हें संसार अंधकारमय लगता था, यथा— विना मे मृगशावाक्ष्या तमोभूतमिदं जगत् ।
(भर्तृहरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसी लंबी कहानी हो जाती है वैसी रति नहीं होती ॥ ३९ ॥

कविकी उक्ति । संभोगशृंगार । हर्ष, उत्सुकता संचारी भाव । संयोगरूप कारण रहतेभी रतिरूप कार्य न होनेसे विशेषोक्ति । हरिणीछंद ॥

दीर्घा वन्दनमालिका विरचिता दृष्ट्यैव नेन्दीवरैः पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः ॥ दत्तः स्वेदमुचा पयोधरयुगेनार्घ्यो न कुम्भाम्भसा स्वैरेवावयवैः प्रियस्य विशतस्तन्व्या कृतं मङ्गलम् ॥ ४० ॥

दृष्टिसे लंबी वंदनमाला बनाई, नील कमलोंसे नहीं, स्मितसे फूलोंका इधर उधर प्रक्षेप किया, कुन्द, चमेली आदिसे नहीं; पसीने टपकाते पयोधरोंसे अर्घ दिया, घडेके जलसे नहीं, इस भांति प्रियके प्रवेश करनेपर, अपने अवयवोंसेही तन्वीने मंगल किया ॥ ४० ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । नायकके आनेपर नायिकाकी चेष्टाका वर्णन । वासकसज्जा नायिका, यथा—

वासकसज्जा होइ सो, कहि केशव सविलास ।
चितै रहै गृहद्वार त्यों, पिय आवनकी आस ॥

संभोगशृंगार । हर्ष, उत्सुकता संचारी भाव । स्वेद सात्विक । नील कमल आदिके निषेधकी प्रतीति होनेसे आक्षेप अलंकार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बंदनवार आदिको नील कमल आदिसे हटाकर दृष्टि आदिमें स्थापित करनेसे अपह्नुति गर्भित परिसंख्या अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द । समान भाव, यथा—

इंदिवरानकों वर्जि सुलोचनि दीठिसों वंदनवार बनाई ।
कुंद चमेलिन मेलि कछू मुसक्यानसों दीन प्रसून बिछाई ॥
स्वेद चुचात पयोधरसों दिय अर्घ न अंभ सुकुंभमें लाई ।
आवत पीयके अंगनिसों निज मंगलरीति सबै निबटाई ॥

कान्ते सागसि शापिते प्रियसखीवेशं विधायागते भ्रान्त्यालिङ्ग्य मया रहस्यमुदितं तत्संगमाकांक्षया ॥ मुग्धे दुष्करमेतदित्यतितरामुक्त्वा सहासं बलादालिंग्य च्छलितास्मि तेन कितवेनाद्य प्रदोषागमे ॥ ४१ ॥

अपराधी पति (नहीं आनेकी) शपथ दिलानेपरभी प्रियसखीका वेश बनाकर आ गया और भ्रान्तिसे आलिंगन कर मैंने उसीके समागमकी आकांक्षासे रहस्य कह दिया । तब " मुग्धे, यह कठिन है " यों कह खूब जोरसे हँसकर और हठसे आलिंगन कर उस-धूर्तने आज सायंकालके समय मुझे ठग लिया ॥ ४१ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । संभोगशृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । शठ नायक । रसान्तर उपाय । सखीकी भ्रान्ति होनेसे भ्रान्ति अलंकार । शपथ दिलानेपरभी आजानेसे विशेषोक्ति ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहानेसे काम साधनेसे पर्यायोक्ति । इनका संकर है । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

आशङ्क्य प्रणतिं पटान्तपिहितौ पादौ करोत्यादरात् व्याजेनागतमावृणोति हसितं न स्पष्टमुद्वीक्षते ॥ मय्यालापवति प्रतीपवचनं सख्या सहाभाषते तस्यास्तिष्ठतु निर्भरप्रणयिता मानोऽपि रम्योदयः ॥ ४२ ॥

यह प्रणाम करेगा ऐसी शंकासे वह वस्त्रके पल्लेसे यत्नपूर्वक पैरोंको ढक लेती है, हँसी आती है तो उसे कपटसे छुपा लेती है, स्पष्ट मेरी ओर देखती नहीं है और मेरे बातचीत करनेपर सखीसे विपरीत वचन कहने लगती है । उस तन्वीका प्रेमातिशय एक ओर रहे, उसके तो मानका उदयभी रमणीय लगता है ॥ ४२ ॥

नायककी उक्ति सखासे । प्रणयमानात्मक विप्रलंभशृंगार । प्रौढा धीरा नायिका । अवाहित्थ संचारी भाव । मानके रमणीय लगनेसे अनुज्ञा अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ—

किंचित्कर्कशतामनुरसं प्रदास्यन्निसर्गमधुरं मे ।
इक्षोरिव ते सुन्दरि मानस्य ग्रंथिरपि काम्यः ॥
(आर्यासप्तशती)

अनरसहूं रस पाइये, रसिक रसीली पास ।
जैसे सांठेकी कठिन, गांठें भरी मिठास ॥
(बिहारीसतसई)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सा यावन्ति पदान्यलीकवचनैरालीजनैः शि-
क्षिता तावन्त्येव कृतागसो द्रुततरं व्याहृत्य
पत्युः पुरः ॥ प्रारब्धा पुरतो यथा मनसिज-
स्याज्ञा तथा वर्तितुं प्रेम्णो मौग्ध्यविभूषणस्य
सहजः कोऽप्येष कान्तः क्रमः ॥ ४३ ॥

झूंठी बातें सिखानेमें चतुर सखियोंने जितनी बातें सिखाईं उतनीही अपराधी पतिके सन्मुख जल्दी कहकर पीछे नायिकाने जैसी कामदेवकी आज्ञा थी वैसाही करना आरंभ किया । सरलतासे भूषित प्रेमकी यही अकृत्रिम और सुंदर परिपाटी है ॥ ४३ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार संभोगशृंगारमें बदल गया है । मुग्धा नायिका । कृत्रिम मान । यथा—

मानो हि द्विविधः प्रोक्तः सहजः कृत्रिमस्तथा ।
स्वयंकृतस्तु सहजः कृत्रिमोऽन्यनियोजितः ॥

यहां विशेष कथनकी सामान्यद्वारा पुष्टि होनेसे अर्थान्तरन्यास अलंकार है, यथा—

जहँ सामान्य विशेष वा, पुष्ट अन्यतें होय ।

पतिके अपराधी होनेपरभी कामाभिलाष पूर्ण करनेसे उत्तमा नायिका । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूरादुत्सुकमागते विवलितं सम्भाषिणि स्फारितं संश्लिष्यत्यरुणं गृहीतवसने किञ्चिन्नतभ्रूलतम् ॥ मानिन्याश्चरणानतिव्यतिकरे बाष्पाम्बुपूर्णेक्षणं चक्षुर्जातमहो प्रपञ्चचतुरं जातागसि प्रेयसि ॥ ४४ ॥

मानिनीका प्रपंचचतुर नेत्र अपराधी प्रियतमके दूर रहनेपर उत्सुक, पास आनेपर कुछ संकुचित, बोलनेपर विस्तारित, आलिंगन करनेपर लाल, वस्त्र पकडनेपर क्रोधसे कुछ टेढी भ्रूलतायुक्त और चरणोंमें प्रणाम करनेपर बाष्प जल पूर्ण हो गया; नेत्रकी इतनी अवस्थाएं बदलीं यह आश्चर्य है ! ॥४४॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । अमर्ष संचारी भाव । नति उपाय । शठ नायक । नेत्रकी बहुतसी क्रिया होनेसे कारक दीपक । अनेक चेष्टाओंका एकही आश्रय होनेसे पर्याय, यथा,

पर्यायहि क्रमतें जबै, बहु इक आश्रय पाय ।

आंसू न गिरनेसे यह प्रकट हुआ कि अभी क्रोध बांकी है, इस कारण यहां भाव शेष है । शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ–

हरि छवि जल जबतें परे, तबतें क्षण निबरैन ।
भरत ढरत बूडत तरत, रहत घरीलौं नैन ॥
(बिहारीसतसई)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अङ्गानामतितानवं कथमिदं कम्पश्च कस्मा-
त्कुतो मुग्धे पाण्डुकपोलमाननमिति प्राणे-
श्वरे पृच्छति ॥ तन्व्या सर्वमिदं स्वभावज-
मिति व्याहृत्य पक्ष्मान्तरव्यापी बाष्पभर-
स्तया चलितया निःश्वस्य मुक्तोऽन्यतः ॥४८॥

"हे सुंदरि ! ये अंग इतने कृश क्यों हो गये ? तू कांपती क्यों है ? क्यों अचानक तेरा मुख पाण्डुकपोलयुक्त हो गया ?" यों प्राणेश्वरके पूंछनेपर तन्वीने "ये सब स्वाभाविक हैं" यह कहकर पलकोंके भीतर रुका हुआ अश्रुजल, मुडकर और लंबे सांस लेकर, अन्य स्थानमें डाल दिया ४८॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । विषाद संचारी भाव । वैवर्ण्य, अश्रु सात्विक । नायिका मध्या धीराधीरा । अपराध करके खुशामदकी बातें करनेसे शठ नायक है, यथा–

मीठी बातें शठ करै, करिके महा बिगार ।

विषाद प्रकट होनेपरभी उसे छुपानेसे व्याजोक्ति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द । तुलनार्थ–

आजु कहा तजि बैठी हौ भूषन ऐसेही अंग कछू अरसीले ।
बोलत बोल रुखाई लिये मतिराम सुनें तैं सनेह रसीले ॥
क्यौं न कहौ दुख प्रान प्रिया अंसुवान रहे भरि नैन लजीले ।
कौन तिन्हें दुख है जिनके तुमसे मनभावन छैल छबीले ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरस्तन्व्या गोत्रस्खलनचकितोऽहं नतमुखः
प्रवृत्तो वैलक्ष्यात्किमपि लिखितुं दैवहतकः ॥
स्फुटो रेखान्यासः कथमपि स तादृक् परि-
णतो गता येन व्यक्तिं पुनरवयवैः सैव
तरुणी ॥ ४६ ॥

तन्वीके सन्मुख भूलसे अन्य स्त्रीका नाम लेनेसे चकित होकर मैंने नीचा मुख कर लिया और प्रतिकूल दैवसे प्रेरित होकर मैं लज्जावश हो, कुछ लिखने लगा। वह रेखाविन्यास किसी प्रकार परिणत होकर ऐसा स्पष्ट हुआ कि जिससे वही तरुणी फिरभी अंगोंसे प्रकट हो गई ॥ ४६ ॥

नायककी उक्ति सखासे। ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार। शठ नायक। यहां नायिकाका मध्यम मान है, यथा—

पियमुख औरहि नारिकौ, सुनै नाम जहँ नारि।
होत मान मध्यम तहां, वरनत सुकवि विचारि ॥

नायक लज्जित हो धरतीमें रेखा खींचने लगा पर अन्य स्त्रीका चित्र बन जानेसे विपरीत फल हुआ इस कारण यहां तृतीय विषम अलंकार है यथा—

विषम अलंकृति तीनि विधि, अनमिलितहिकौ संग।
कारनकौ रँग और कछु, कारज औरै रंग ॥
और भलौ उद्यम किये, होत बुरौ फल आइ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्य नायिकाका बार २ चिन्तन करनेसे उसीका नाम नायकके मुखसे निकल गया और भूमिपर लिखतेमेंभी संस्कार-वश उसीका चित्र नायकसे लिखा गया, इस कारण यहां संस्कार अलंकार है, यथा–

अनुभूतवासनानुमेयः संस्कारः ।

शिखरिणी छन्द । तुलनार्थ–

दोऊ अनंदसों आंगन मांझ विराजे असाढकी सांझ सुहाई ।
प्यारीकौं पूंछत आन तियाकौ अचानक नाम लियौ रसिकाई ॥
आयौ उन्हैं मुंह मेहसौ कोह तिया सुरचापसी भौंह चढाई ।
आखिनतें गिरे बूंदसे आंसू हुलास गयौ उडि हंसकी नांई ॥

कठिनहृदये मुञ्च भ्रांतिं व्यलीककथाश्रितां
पिशुनवचनैर्दुःखं नेतुं न युक्तमिमं जनम् ॥
किमिदमथवा सत्यं मुग्धे त्वया सुविनिश्चितं
यदभिरुचितं तन्मे कृत्वा प्रिये सुखमा-
स्यताम् ॥ ४७ ॥

हे कठिनहृदये! मिथ्या वचनोंसे उत्पन्न हुई भ्रांतिको छोड, दुष्टोंके कहनेमें आकर इस जनको सताना ठीक नहीं है। अथवा हे मुग्धे ! क्या यह वास्तवमें आज तूने निश्चय कर लिया है ? हे प्रिये ! जो चाहे सो मेरा कर ले और सुखी हो ॥ ४७ ॥

नायककी उक्ति नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । दीनता संचारी भाव । साम उपायका प्रयोग । धृष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नायक । खण्डिता नायिका । नायिकाके सुखी करनेको चाहें जो कुछ कर लेना अंगीकार करनेसे अनुज्ञा अलंकार । हारिणी छन्द ॥

मन्दं मुद्रितपांशवः परिपतज्झङ्कारझंझामरु-
द्वेगध्वस्तकुटीरकान्तरगतच्छिद्रेषु लब्धान्त-
राः ॥ कर्मव्यग्रकुटुम्बिनीकुचतटस्वेदच्छिदः
प्रावृषः प्रारम्भे निपतन्ति कन्दलदलोल्लासाः
पयोबिन्दवः ॥ ४८ ॥

धीरे २ धूलको नीचे बैठाते, झंकार करती आंधीके वेगसे ध्वंस किये गये तृणकुटीरोंके मध्यगत विवरोंमें स्थान पाते, घरके काममें लगी हुई कामिनियोंके कुचोंके पसीनेको हरते, केलेके पत्तोंको उल्लासित करते जलबिन्दु वर्षाऋतुके आरम्भमें बरसते हैं ॥ ४८ ॥

वर्षाऋतुवर्णन । जलबिन्दुओंके अनेक क्रिया करनेसे कारक दीपक । उनका बहुत स्थानोंमें वर्णन होनेसे तृतीयविशेष । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

पीतस्तुषारकिरणो मधुनैव सार्द्धमन्तः प्रवि-
श्य चषके प्रतिबिम्बवर्ती ॥ मानान्धकारमपि
मानवतीजनस्य नूनं बिभेद यदसौ प्रससाद
सद्यः ॥ ४९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्यलेमें प्रतिबिंबित हुआ चंद्रमा मद्यके साथही पी लिया और उसने भीतर जाकर मानवती स्त्रियोंके मानान्धकारकाभी नाश कर दिया क्योंकि उसी क्षणसे मानिनियां मानरहित हो गईं ॥ ४९ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोगशृंगार । मानके साथ अंधेरेका रूपक । मदिरा और चन्द्र (उद्दीपन विभाव) से मानिनीके मानमोचनका वर्णन । सहोक्तिअलंकार । हेतुसहित कार्यका वर्णन होनेसे हेतु । चंद्रमा उद्दीपनविभावके प्रभावसे मान मिट जानेके वर्णनके लिये चंद्रबिंबका मदके साथ पी जाना मिथ्यारीति वर्णन करनेसे मिथ्याऽध्यवसिति अलंकार, यथा-

मिथ्याध्यवसित कहत कछु, मिथ्या कल्पन रीति ।

मदके प्यलेमें प्रतिबिंबित चन्द्रका मान मेटनेका अकारण होनेपरभी मान मिट जानेसे चतुर्थ विभावना । वसंततिलका छंद । तुलनार्थ-

पिय सांह कही पुन बांह गही कटु वानि सही धर धीर घनेरौ।
कर जोर खरौ रहि पाय परौ स्वरभंग गरौ किय भाख्यौ हौं चेरौ॥
सबही जु मुरार उपायनके सह व्यर्थ भयौ समुझायवौ मेरौ।
मदमें प्रतिबिंबित चंद पियौ तिह दूर कियौ मनमान अंधेरौ ॥

नभसि जलदलक्ष्मीं सास्रया वीक्ष्य दृष्ट्या
प्रवससि यदि कान्तेत्यर्द्धमुक्त्वा कथञ्चित् ॥
मम पटमवलंब्य प्रोल्लिखन्ती धरित्रीं यदनु
कृतवती सा तत्र वाचो निवृत्ताः ॥ ८० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आंसू भरी दृष्टिसे आकाशमें मेघसामग्रीको देखकर " हे कान्त ! यदि प्रवास करोगे " यह आधा वाक्य किसी प्रकार कहकर तथा मेरा वस्त्र पकडकर धरती कुरेदती, नायिकाने पीछे जो कुछ किया वह वाणीकी गतिके बाहर है ॥ ९० ॥

नायककी उक्ति सखासे । भविष्यत्प्रवासात्मक विप्रलंभशृंगार । दीनता संचारी भाव । स्वरभंग, अश्रु सात्विक । नायिका स्वकीया मुग्धा । अनुकूल नायक । पतिके प्रदेश गमनके समय मेघागम देखकर नायिकाके मुखसे आधा वचन तो निकला पर फिर धैर्य न रहा, इससे यहां अधैर्याक्षेप है यथा–

प्रेमभंग जहँ सुनतही, उपजत सात्विक भाव ।
कहत अधीरज कौ सुकवि, यह आक्षेप सुभाव ॥

नर्मस्फोट । जाति अलंकार । मालिनी छंद ॥

इयमसौ तरलायतलोचना गुरुसमुन्नतपीनपयोधरा ॥ पृथुनितम्बभरालसगामिनी प्रियतमा मम जीवितहारिणी ॥ ९१ ॥

यह चंचल और दीर्घ नेत्रवाली, पृथुल, उन्नत तथा पीनस्तनवाली, और स्थूल नितंबके भारसे मन्द गमन करनेवाली प्रियतमा मेरे जीवनको आनंद देती है ॥ ९१ ॥

नायककी उक्ति सखासे । संभोगशृंगार । प्रौढा नायिका । जाति अलंकार । मन्द गमनका उत्कर्ष दिखानेके लिये स्थूलनितंबके भार–अहेतु–को हेतु बतानेसे प्रौढोक्ति अलंकार यथा–

१ " श्रोणीभारादलसगमना " (मेघदूत)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रौढ उक्ति उत्कर्षकौ, करे अहेताहि हेत ।

द्रुत विलंबित छंद, यथा-

द्रुतविलंबितमाह नभौ भरौ ।

अर्थात् न, भ, भ, र, गण ॥

सालक्तकेन नवपल्लवकोमलेन पादेन नूपुरवता मदनालसेन ॥ यस्ताड्यते दयितया प्रणयापराधात्सोऽङ्गीकृतो भगवता मकरध्वजेन ॥ ५२ ॥

महावर लगे, नई कोंपलके समान कोमल, कामसे मन्द, तथा नूपुरयुक्त चरणसे दयिताने जिसका, प्रणयापराधके कारण ताडन किया उसेही भगवान् कामदेवने अंगीकार कर लिया ॥ ५२ ॥

कविकी उक्ति । प्रणयमानात्मक विप्रलंभशृंगार । धृष्ट नायक । चरण उपमेय, कोंपल उपमान, कोमल धर्म, समान वाचक, चारोंके होनेसे पूर्णोपमा । ताडनरूप दोषका कामदेवसे अंगीकाररूप गुण हो जानेसे लेश अलंकार, यथा:-

लेशः स्याद्दोषगुणयोर्गुणदोषत्वकल्पनम् ।

वसंततिलका छंद ॥

बाले नाथ विमुञ्च मानिनि रुषं रोषान्मया किं कृतं खेदोऽस्मासु न मेऽपराध्यति भवान्स-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वैंऽपराधा मयि ॥ तत्किं रोदिषि गद्गदेन वचसा कस्याग्रतो रुद्यते नन्वेतन्मम का तवास्मि दयिता नास्मीत्यतो रुद्यते ॥ ५३ ॥

नायक–हे मुग्धे ! नायिका–हे नाथ ! नायक–हे मानिनि ! रोष छोड नायिका–रोष करके मैंने तुम्हारा क्या कर लिया ? नायक–हमें खेद पहुँचाया । नायिका–(जो अपराधी हो उसे खेद होता है) तुमने तो मेरा कोई अपराध नहीं किया, सब अपराध मेरेही हैं (क्योंकि मैंने तुम्हारी उपेक्षा की इसीसे तुम दुराचारी हो गये)। नायक–फिर गद्गद वाणीसे क्यों रोती है ? नायिका–किसके आगे रोती हूं ? नायक–हमारे आगे । नायिका–मैं तुम्हारी कौन हूं ? नायक–तू मेरी प्यारी है । नायिका–प्यारी नहीं हूं, इसीसे तो रोती हूं ॥ ५३ ॥

ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । अश्रु सात्विक । विषाद, धृति संचारी भाव । मध्या धीराधीरा नायिका । दूसरा उत्तर अलंकार । जालिअलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द । समानभाव यथा–

ए बलि कहौं हो किन ! का कहत कंत अरी रोस तज रोष कै कियौ मैं का अचाहेको । कहै पदमाकर यहै तो दुख दूरि करौ दोस न कछू है तुम्हें नेह निरबाहेको ॥ तौपै इत रोवति कहा हौ कहौ कौन आगे मेरेईजु आगे किये आंसुन उमाहेको । को हौं मैं तिहारी ? तू तो मेरी प्रानप्यारी ! अजू होती जो पियारी तब रोती कहो काहेको ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीत्वोच्चैर्विक्षिपन्तः कृततुहिनकणासारसङ्गान् परागान् कौन्दानानन्दितालीनतितरसुरभीन् भूरिशो दिङ्मुखेषु ॥ एते ते कुङ्कुमाक्तस्तनकलशभरास्फालनादुच्छलन्तः पीत्वा सीत्कारिवक्त्रं शिशुहरिणदृशां हैमना वान्ति वाताः ॥ ९४ ॥

भ्रमरोंको संतोषदायक, अत्यन्त सुगंधित, तुषारकणोंकी वृष्टिका भ्रम उत्पन्न करते कुन्दके परागोंको उडाकर दिशामुखोंमें फेंकता हुआ, कुंकुमलेपयुक्त स्तनकलशोंसे टकरा जानेसे ऊंचा जाता बालमृगलोचनाओंके सीत्कारयुक्त मुखका स्पर्श करके यह हेमन्तऋतुका पवन बहता है ॥ ९४ ॥

हेमन्तऋतुके पवनका वर्णन । स्तन उपमेय, कलश उपमान, टकराना धर्म, वाचकके न होनेसे वाचकलुप्तोपमा । स्रग्धराछन्द ॥

श्रुत्वा कस्मान्निशीथे नवघनरसितं विश्लथाङ्गं पतित्वा शय्यायां भूमिपृष्ठे करतलधृतया दुःखितालीजनेन ॥ सोत्कंठं मुक्तकंठं कठिनकुचतटाघातशीर्णाश्रुबिन्दु स्मृत्वा स्मृत्वा प्रियस्य स्खलितमृदुवचो रुद्यते पान्थवध्वा ॥ ९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आधी रातको अचानक नवीन मेघकी गर्जना सुनकर शिथिलशरीर हो शय्यापरसे धरतीपर गिरती जिस पथिक-वधूको दुःखित सखियोंने हाथसे सहारा दिया था वह प्रिय-तमका वारंवार स्मरण करके उत्कंठासहित अस्पष्ट मृदु वचन कहती, कण्ठ खोलकर रोती है और आंसुओंकी बूंदें कठिन स्तनोंपर गिर २ कर छिन्न भिन्न होती हैं ॥ ५५ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । पतिवियोग आलंबनाविभाव । मेघशब्द उद्दीपनाविभाव । स्मरण, उत्सुकता संचारी भाव । स्वरभंग अश्रु सात्विक । वचन अनु-भाव । स्मृति दशा । प्रोषितपतिका नायिका यथा—

नानाकार्यवशाद्यस्या दूरदेशं गतः पतिः ।
सा मनोभवदुःखार्ता भवेत्प्रोषितभर्तृका ॥

जातिअलंकार । स्तन उपमेय कठिन धर्म, उपमान तथा वाचक न होनेसे उपमानवाचकलुप्तोपमा यथा—

वाचक धर्म रु वरनानिय, है चौथो उपमान ।
इक बिनु द्वै बिनु तीन बिनु, लुप्तोपमा प्रमान ॥

स्रग्धरा छन्द ॥

श्लिष्टः कण्ठे किमिति न मया मूढया प्राण-
नाथश्चुम्बत्यस्मिन् वदनविधुतिः किं कृता
किं न दृष्टः ॥ नोक्तः कस्मादिति नववधूचे-
ष्टितं चिन्तयन्ती पश्चात्तापं वहति तरुणी
प्रेम्णि जाते रसज्ञा ॥ ५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझ मूढाने प्राणनाथका कंठालिंगन क्यों न किया ? उनके चुंबन करनेपर मैंने मुख नीचा क्यों कर लिया ? उन्हें क्यों न देखा ? उत्तर क्यों न दिया ? इस प्रकार अपनी नववधूकी चेष्टाओंका चिन्तन करती रसीली तरुणी प्रेमके उत्पन्न होनेपर परिताप करती है ॥ ८६ ॥

संभोग शृंगार । चिन्ता, विषाद, संचारी भाव । मुग्धा कलहांतरिता नायिका । विषाद, अलंकार, यथा–

इष्यमाणविरुद्धार्थसंप्राप्तिस्तु विषादनम् ।

मन्दाक्रान्ता छंद ॥

श्रुत्वा नामापि यस्य स्फुटघनपुलकं जायतेऽङ्गं समन्तात् दृष्ट्वा यस्याननेन्दुं भवति वपुरिदं चन्द्रकान्तानुकारि ॥ तस्मिन्नागत्य कण्ठग्रहनिकटपदस्थायिनि प्राणनाथे भग्ना मानस्य चिन्ता भवति मम पुनर्वज्रमय्याः कदा नु ॥ ८७ ॥

जिसका नाम सुनकरभी मेरा अंग सब ओर घने रोमांचोंसे व्याप्त हो जाता है, जिसका मुखचन्द्र देखकर यह शरीर चन्द्रकान्तमणिका अनुकरण करने लगता है (अर्थात् इसमेंसे पसीने निकलने लगते हैं), उस प्राणनाथके, यहां आकर, कंठालिंगनके लिये सहर्ष खडे होनेपर कब मुझ वज्रमयीकी मान चिन्ता छूटेगी ॥ ८७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानिनीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । रोमांच, स्वेद सात्विक । वचन अनुभाव । उत्सुकता, हर्ष संचारी भाव । शरीर उपमेय, चन्द्रकान्तमणि उपमान । अनुकरण करना धर्म, वाचकके न होनेसे वाचक लुप्तोपमा । स्रग्धराछंद ॥

रामाणां रमणीयवक्त्रशशिनः स्वेदोदबिंदुप्लुतो व्यालोलालकवल्लरीं प्रचलयन् धुन्वन् नितम्बाम्बरम् ॥ प्रातर्वाति मधौ प्रकामविकसद्राजीवराजीरजो जालामोदमनोहरो रतिरसग्लानिं हरन्मारुतः ॥ ५८ ॥

महिलाओंके मनोहर मुखचंद्रके पसीनेकी बूंदोंसे आर्द्र, उनकी चंचल अलकावलीको चलायमान करता, नितंबके वस्त्रको कंपाता, रतिरसके श्रमको हरता, खूब खिले हुए कमलोंके परागपुंजकी सुगंधसे सुंदर वायु वसंतमें प्रातःकाल बहता है ॥ ५८ ॥

बसन्तके शीतल, मंद, सुगंधित पवनका वर्णन, यथा—

अम्बु परसिकर बहति जो, सोई शीतल पौन ।
बहै रुकै पुनि बहि चलै, सो है मन्द समीर ॥
कुसुम परसिकै चलति जो, तौन सुगंधित पौन ॥

पवनकी बहुत क्रिया होनेसे कारकदीपक । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अङ्गं चन्दनपाण्डु पल्लवमृदुस्ताम्बूलताम्राधरो धारायन्त्रजलाभिषेककलुषे धौताञ्जने लोचने ॥ अन्तःपुष्पसुगन्धिरार्द्रकबरी सर्वाङ्गलग्नाम्बरं रामाणां रमणीयतां विदधाति ग्रीष्मापराह्णागमे ॥ ५९ ॥

चन्दन लगानेसे सफेद हुआ शरीर, पान खानेसे लाल हुए कोंपलके समान कोमल अधर, फौवारेके जलमें नहानेसे लाल हुए काजलरहित नेत्र, बीचमें लगे हुए फूलोंसे सुगंधित हुआ गीला केशपाश, सब अंगमें (गीला होनेसे) चिपटा महीन कपडा ये सब ग्रीष्मऋतुके संध्यासमयमें कामिनियोंकी कमनीयता बढाते हैं ॥ ५९ ॥

ग्रीष्मऋतुके उपचारका वर्णन । अधर उपमेय, कोंपल उपमान, कोमल धर्म, समान वाचक, चारोंके होनेसे पूर्णोपमा। संध्यासे कामिनियोंकी शोभाके औरभी बढनेसे अनुगुण अलंकार यथा—

अनुगुन संगतितें जबै, पूरब गुन सरसाय ।

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

वरमसौ दिवसो न पुनर्न्निशा ननु निशैव वरं न पुनर्दिवा ॥ उभयमेतदुपैत्वथवा क्षयं प्रियजनेन न यत्र समागमः ॥ ६० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक सखी–हे सखि ! यह दिन अच्छा है, पर रात्रि नहीं। दूसरी–हे सखि ! रात्रिही अच्छी है, दिन अच्छा नहीं। येका–जिनमें प्रियतमके साथ समागम न हो उन रात दिन दोनोंका नाश हो ॥ ६० ॥

विप्रलंभश्रृंगार । पर्यायोक्ति अलंकार । वियोगिनी नायिका । द्रुतविलंबित छंद ॥

लोलैर्लोचनवारिभिः सशपथैः पादप्रणामैः प्रियैरन्यास्ता विनिवारयन्ति कृपणाः प्राणेश्वरं प्रस्थितम् ॥ पुण्याहं व्रज मंगलं सुदिवसं प्रातः प्रयातस्य ते यत्स्नेहोचितमीहितं प्रियतम त्वं निर्गतः श्रोष्यसि ॥ ६१ ॥

जो प्रस्थान करते प्राणनाथको ढुलकते आंसुओंसे तथा प्रीतिजनक शपथें दिलाकर चरणोंमें गिर २ कर रोकती हैं वे कृपण स्त्रियां औरही होती हैं । हे प्रियतम ! मैं भाग्यवती हूं, तुम्हारा मंगल हो, (इच्छापूर्वक) जाओ, तुम्हारा शुभ दिन हो, तुम्हारे चले जानेपर सबेरे जो स्नेहोचित करना मैंने विचारा है उसे तुम कुछ आगे जाकर सुन लोगे (अर्थात् मैं तुम्हारे विरहमें प्राणत्याग करूंगी) ॥ ६१ ॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे । प्रवास विप्रलंभश्रृंगार । प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । उत्सुकता संचारी भाव । आशीर्वादाक्षेप,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यथा—

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः संतु ते शिवाः ।
ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥
इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।
स्वावस्थां सूचयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

लग्ना नांशुकपल्लवे भुजलता न द्वारदेशेऽर्पि-
ता नो वा पादतले तया निपतितं तिष्ठेति
नोक्तं वचः ॥ काले केवलमम्बुदालिमलिने
गन्तुं प्रवृत्तः शठस्तन्व्या बाष्पजलौघकल्पि-
तनदीपूरेण रुद्धः प्रियः ॥ ६२ ॥

उसने प्रियतमका वस्त्राञ्चल न पकडा, न द्वारदेशको भुज-लतासे रोका, न वह चरणोंमें लोटी, न उसने ठहरनेको कहा। मेघमालासे मलिन हुए समयमें जब निर्दय पति जानेको तैयार हुआ तब तन्वी ने केवल अश्रुकल्लोलोंसे कल्पित नदीके प्रवा-हसे उसे रोक लिया ॥ ६२ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । अश्रु सात्विक । दीनता संचारी भाव । मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । उपायाक्षेप । अश्रुओंकी नदी कहनेसे अत्युक्ति, यथा—

अत्युक्तिरद्भुतातथ्यशौर्यौदार्यादिवर्णनम् ।

द्वितीय विभावना । मेघ तथा नेत्रोंकी क्रिया एक है, पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होनेवाली नेत्रोंकी क्रियाका पहले वर्णन करनेसे पूर्व अलंकार, यथा—

यत्रैकविधावर्थौ जायेते तौ तयोरपूर्वस्य ।
अभिधानं प्रागभवतः सतोऽभिधीयेत तत्पूर्वम् ॥

शार्दूलविक्रीडित छंद । तुलनार्थ—

केशव प्रात बडेही बिदा कहुँ आये प्रिया पहँ नेह न हेरी ।
आऊं महावन है जु कहौ हँसि बोल द्वै ऐसे बनाइ कहे री ॥
को प्रति उत्तर देय सखी सुनि लोल बिलोचन यों उमहे री ।
सोंहक कै हरि हारि रहे अधरातिकलों अंसुआन रहे री ॥

**न जाने संमुखायाते प्रियाणि वदति प्रिये ॥
सर्वाण्यङ्गानि मे यान्ति नेत्रतां किमु कर्ण-
ताम् ॥ ६३ ॥**

जब प्रिय सन्मुख आता है और प्यारी २ बातें करता है तब मेरे सब अंग न जानें उसे देखनेको नेत्र हो जाते हैं या उसकी बातें सुननेको कान हो जाते हैं ॥ ६३ ॥

सखीने नायिकाको उलाहना दिया कि तुम मेरे सामने तो मानकी बातें मारती हो पर पतिके सामने जराभी मान नहीं करतीं । इसपर नायिकाका उत्तर सखीसे । संभोग शृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । नायिका प्रौढा प्रेमगर्विता । उत्तर सुनतेही प्रश्नको बोध होनेसे उत्तर अलंकार, यथा—

उत्तरश्रुतिमात्रतः प्रश्नस्योन्नयनं यत्र ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संशय होनेसे संदेह अलंकार । क्रमपूर्वक वर्णन होनेसे यथासंख्य अलंकार, यथा—

यथासंख्य वर्णनविषै, वस्तु अनुक्रम संग ।

नायकका ललित सात्विक गुण, यथा—

वाग्वेशयोर्मधुरता तद्वच्छृंगारचेष्टितं ललितम् ।

अनुष्टुप् छन्द, यथा—

पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ॥

अर्थात् प्रत्येक चरणमें आठ अक्षर, पंचम लघु, षष्ठ गुरु, तथा दूसरे और चौथे चरणमें सातवां अक्षर लघु । तुलनार्थ—

ता राघवं दृष्टिभिरापिबन्त्यो नार्यो न जग्मुर्विषयांतराणि ।
तथा हि शेषेन्द्रियवृत्तिरासां सर्वात्मना चक्षुरिव प्रविष्टा ॥

(रघुवंश)

किमिति लोचनमयान्येव ममांगानि न कृतानि विधिना ।

(वासवदत्ता)

" All senses to that sense did make their repair,
To feel only looking on fairest of fair:
Methought all his senses were lock'd in his eye,
As ewels in crystal for some prince to buy. "

(शेक्सपियर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विरहविषमः कामो वामस्तनुं कुरुते तनुं
दिवसगणनादक्षश्चासौ व्यपेतघृणो यमः ॥
त्वमपि वशगो मानव्याधेर्विचिन्तय नाथ हे
किसलयमृदुर्जीवेदेवं कथं प्रमदाजनः ॥ ६४ ॥

हे नाथ ! विरहमें प्रतिकूल हुआ कामदेव तुम दोनोंके शरीरोंको दुबला करता है, यह निर्घृण यम दिन गिननेमें लगा हुआ है अर्थात् संयोग हो वा वियोग आयु तो कम होतीही है तुमभी मानरूपी व्याधिके वशीभूत हो इस कारण विचार करो, कोंपलके समान कोमल अबला कैसे जियें ? ॥ ६४ ॥

दूतीका वचन नायकसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभश्रृंगार । वैवर्ण्य सात्विक । अबला उपमेय, कोंपल उपमान, समान वाचक, कोमल धर्म, चारोंके होनेसे पूर्णोपमा । संयोग तथा वियोगमें आयु कम होना कहनेसे तुल्ययोगिता, यथा—

हिताहिते वृत्तितौल्यमपरा तुल्ययोगिता ।

हरिणी छंद ॥

पादासक्ते सुचिरमिह ते वामता कैव कान्ते
सन्मार्गस्थे प्रणयिनि जने कोपने कोऽपराधः ॥
इत्थं तस्याः परिजनकथाकोपवेगोपशान्तौ
बाष्पोद्भेदैस्तदनु सहसा न स्थितं न प्रयातम् ॥ ६५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे सुंदरि ! प्रणयी जनके चिरकालतक चरणोंमें पडे रहनेपर यह प्रतिकूलता कैसी ? और उसके सदाचरणशील होनेपर हे कोपने ! यह अनुरोध कैसा ?" इस प्रकार परिजनोंके कहनेसे उसके कोपवेगके नरम होनेपर सहसा आंसू न ठहरे न बहे॥ ६५॥

सखीकी उक्ति सखीसे ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार। स्तंभ सात्विक। नति और साम उपाय। हेतु अलंकार। आंसू न ठहरे न बहे ये दोनों क्रिया सजातीय हैं और आपसमें विरुद्ध हैं। इनमेंसे एकका होना आवश्यक है। यहां दोनोंका अभाव कहनेसे विरोध अलंकार, यथा—

यत्रावश्यंभावी ययोः सजातीययोर्भवेदेकः।
एकत्र विरोधवतोस्तयोरभावोऽयमन्यस्तु ॥

मन्दाक्रान्ता छंद ॥

पुराभूदस्माकं नियतमविभिन्ना तनुरियं ततो
नु त्वं प्रेयान् वयमपि हताशाः प्रियतमाः ॥
इदानीं नाथस्त्वं वयमपि कलत्रं किमपरं
मयाप्तं प्राणानां कुलिशकठिनानां फलमिदम् ॥ ६६ ॥

पहले हमारा शरीर वास्तवमें अविभक्त था, परन्तु पीछे न तुम प्रिय रहे और न हताशा मैं प्रियतमा रही। अब तुम नाथ हो और हम कलत्र हैं, इससे अधिक और क्या कहूं? (तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पराङ्मुख हो जानेसे) मैंने (ऐसी दशामेंभी विनाशरहित होनेसे) कुलिशके समान कठिन प्राणोंका यह फल पाया॥६६॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे। ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार। विषाद संचारी भाव। मध्या अधीरा नायिका। दोनों अवस्थाओंका आश्रय एकही होनेसे पर्याय अलंकार। प्राण उपमेय, कुलिश उपमान, कठिन धर्म, समान वाचक, चारोंके होनेसे पूर्णोपमा। शिखारिणी छंद। तुलनार्थ—

नाथेति परुषमुचितं प्रियेति दासेत्यनुग्रहो यत्र।
तद्दाम्पत्यमितोऽन्यन्नारीरज्जुः पशुः पुरुषः॥
(आर्यासप्तशती)

बामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्राणेश।
प्यारी कहत लजात नहिं, पावस चलत विदेश॥
(विहारीसतसई)

मुग्धे मुग्धतयैव नेतुमखिलः कालः किमारभ्यते मानं धत्स्व धृतिं बधान ऋजुतां दूरे कुरु प्रेयसि॥ सख्यैवं प्रतिबोधिता प्रतिवचस्तामाह भीतानना नीचैः शंस हृदि स्थितो ननु स मे प्राणेश्वरः श्रोष्यति॥ ६७॥

" हे सुंदरि ! तूने सब समय सरलतासेही बिताना क्यों आरंभ कर दिया है ? मान धारण कर, धैर्य धर, प्रियतमके साथ सरलता दूर कर " इस प्रकार जब सखीने सिखाया तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे सुंदरि ! प्रणयी जनके चिरकालतक चरणोंमें पडे रहनेपर यह प्रतिकूलता कैसी ? और उसके सदाचरणशील होनेपर हे कोपने ! यह अनुरोध कैसा ?" इस प्रकार परिजनोंके कहनेसे उसके कोपवेगके नरम होनेपर सहसा आंसू न ठहरे न बहे॥ ६५॥

सखीकी उक्ति सखीसे ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । स्तंभ सात्विक । नति और साम उपाय । हेतु अलंकार । आंसू न ठहरे न बहे ये दोनों क्रिया सजातीय हैं और आपसमें विरुद्ध हैं । इनमेंसे एकका होना आवश्यक है । यहां दोनोंका अभाव कहनेसे विरोध अलंकार, यथा—

यत्रावश्यंभावी ययोः सजातीययोर्भवेदेकः ।
एकत्र विरोधवतोस्तयोरभावोऽयमन्यस्तु ॥

मन्दाक्रान्ता छंद ॥

पुराभूदस्माकं नियतमविभिन्ना तनुरियं ततो
नु त्वं प्रेयान् वयमपि हताशाः प्रियतमाः ॥
इदानीं नाथस्त्वं वयमपि कलत्रं किमपरं
मयाप्तं प्राणानां कुलिशकठिनानां फलमिदम् ॥ ६६ ॥

पहले हमारा शरीर वास्तवमें अविभक्त था, परन्तु पीछे न तुम प्रिय रहे और न हताशा मैं प्रियतमा रही । अब तुम नाथ हो और हम कलत्र हैं, इससे अधिक और क्या कहूं ? (तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पराङ्मुख हो जानेसे) मैंने (ऐसी दशामेंभी विनाशरहित होनेसे) कुलिशके समान कठिन प्राणोंका यह फल पाया॥६६॥

नायिकाकी उक्ति नायकसे। ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार। विषाद संचारी भाव । मध्या अधीरा नायिका। दोनों अवस्थाओंका आश्रय एकही होनेसे पर्याय अलंकार । प्राण उपमेय, कुलिश उपमान, कठिन धर्म, समान वाचक, चारोंके होनेसे पूर्णोपमा । शिखरिणी छंद । तुलनार्थ—

नाथेति परुषमुचितं प्रियेति दासेत्यनुग्रहो यत्र ।
तद्दाम्पत्यमितोऽन्यन्नारीरज्जुः पशुः पुरुषः ॥
(आर्यासप्तशती)

बामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्राणेश ।
प्यारी कहत लजात नहिं, पावस चलत विदेश ॥
(विहारीसतसई)

मुग्धे मुग्धतयैव नेतुमखिलः कालः किमारभ्यते मानं धत्स्व धृतिं बधान ऋजुतां दूरे कुरु प्रेयसि ॥ सख्यैवं प्रतिबोधिता प्रतिवचस्तामाह भीतानना नीचैः शंस हृदि स्थितो ननु स मे प्राणेश्वरः श्रोष्यति ॥ ६७ ॥

" हे सुंदरि ! तूने सब समय सरलतासेही बिताना क्यों आरंभ कर दिया है ? मान धारण कर, धैर्य धर, प्रियतमके साथ सरलता दूर कर " इस प्रकार जब सखीने सिखाया तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके चेहरेसे मालूम हुआ कि वह डर गई और उसने उत्तर दिया कि " धीरे धीरे कह क्योंकि मेरे हृदयमें स्थित प्राणेश्वर सुन लेगा " ॥ ६७ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । त्रास संचारी भाव । वैवर्ण्य सात्विक । उत्तमा नायिका । हृदयमें प्राणेश्वर बताकर धीरे २ कहनेका समर्थन करनेसे काव्यलिंग । सखी प्रेमकी साधक है, उसीके बाधक होनेसे विपरीत अलंकार, यथा—

कारज साधकको जहां, साधन बाधक होय ।
तासों सब विपरीत कहि, बरनत बुधजन लोय ॥

प्रेमालंकार, यथा—

कपट निपट मिटि जाय जहँ, उपजै पूरण क्षेम ।
ताहीसौं सब कहत हैं, केशव उत्तम प्रेम ॥

प्रत्युत्तर होनेसे दूसरा उत्तर मोट्टायितहाव, यथा—

सुनत भावतेकी कथा, भाव प्रकट जहँ होत ।
मोट्टायित तासों कहैं, हाव कविनको गोत ॥

शार्दूलविक्रीडित छंद । तुलनार्थ—

सखी सिखावति मान विधि, सैननि वरजति बाल ।
हरये कहि मो हिय बसत सदा बिहारीलाल ॥
(बिहारीसतसई)

पीतो यतः प्रभृति कामपिपासितेन तस्या मयाऽधररसः प्रचुरः प्रियायाः ॥ तृष्णा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ततः प्रभृति मे द्विगुणत्वमेति लावण्यमस्ति बहु तत्र किमत्र चित्रम् ॥ ६८ ॥

जबसे मैंने कामपिपासित होकर प्रियाका प्रचुर अधररस पिया तबसेही मेरी तृष्णा[1] दूनी होती जाती है । इसमें कुछ आश्चर्य नहीं, क्योंकि वहां लावण्य बहुत है ॥ ६८ ॥

(लावण्य = सौंदर्य तथा नमकीनी) नायककी उक्ति सखासे । संभोग शृंगार । विरही नायक । उत्सुकता संचारी भाव । अधररस पीकर तृष्णा बुझानेकी चाहके विपरीत दूनी तृष्णा हो जानेसे विषाद अलंकार । पीनेसेभी प्यास न बुझनेसे विशेषोक्ति । वसंततिलका छंद । तुलनार्थ—

त्यौं २ प्यासेई रहत, ज्यौं २ पियत अघाइ ।
सगुण सलौने रूपकौ, जु न चख तृषा बुझाइ ॥
(विहारीसतसई)

क्व प्रस्थितासि करभोरु घने निशीथे प्राणाधिको वसति यत्र जनः प्रियो मे ॥ एकाकिनी वद कथं न बिभेषि बाले नन्वस्ति पुंखितशरो मदनः सहायः ॥ ६९ ॥

---

१ यथा—न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥
(भगवद्गीता)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रश्न–हे करभोरु ! अंधेरेसे घनघोर आधी रातमें कहां जाती है ? उत्तर–जहां मेरा प्राणोंसेभी अधिक प्यारा रहता है। प्रश्न–बाले ! तुझे अकेले डर क्यों नहीं लगता है ? उत्तर–सजा सजाया धनुष लिये कामदेव तो मेरा सहायक है ॥ ६९ ॥

नई स्वैरिणी और अभिसारिकाकी उक्तिप्रत्युक्ति । प्रौढा कृष्णाभिसारिका नायिका । संभोग शृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । उत्तर अलंकार । वसंततिलका छंद । समान भाव, यथा–

कौन है तू कित जात चली बलि बीति निशा अधराति प्रमानै ।
हौं पदमाकर भावति हौं निज भावतपै अबहीं मुहि जानै ॥
तौ अलबेली अकेली डरै किन क्यौं डरौं मेरी सहायकै लानै ।
है सखि संग मनोभवसौ भट कानलौं बान सरासन तानै ॥

लीलातामरसाहतोऽन्यवनितानिःशङ्कदष्टाध-
रः कश्चित्केसरदूषितेक्षण इव व्यामील्य नेत्रे
स्थितः ॥ मुग्धा कुड्मलिताननेन ददती
वायुं स्थिता तस्य सा भ्रान्त्या धूर्त्ततया च
वेपथुमती तेनानिशं चुम्बिता ॥ ७० ॥

अन्य स्त्रीने स्वच्छंदतापूर्वक जिसके अधर खंडित कर दिये थे ऐसा कोई कामुक, नायिकाद्वारा लीलारक्तकमलसे ताडना

---

१ यथा–रजनीतिमिरावगुंठिते पुरमार्गे घनशब्दविक्लवाः ।
वसतिं प्रियकामिनां प्रियास्त्वदृते प्रापयितुं क ईश्वरः ॥
(कुमारसंभव, रतिविलाप)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया गया, नेत्रोंमें कमलरज पड जानेके बहाने, आंखें मीच-कर खडा हो गया । उसका कपट न जानती हुई मुग्धा पराग पड जानेकी भ्रान्तिसे मुख कुछ खोलकर नेत्रोंमें हवा करती हुई वहां खडी रही और उसने कांपती हुईका धूर्ततासे बार २ चुंबन किया ॥ ७० ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार संभोगशृंगारमें बदल गया है । प्रौढा अधीरा खंडिता नायिका । धृष्ट नायक । रसान्तर उपाय । पराग आंखोंमें पड जानेके बहाने चुंबनरूप कार्य साधनेसे पर्यायोक्ति । शार्दूलविक्रीडित छंद । तुल्यार्थ—

स्मरसि स्मर मेखलागुणैरुत गोत्रस्खलितेषु बंधनम् ।
च्युतकेशरदूषितेक्षणान्यवतंसोत्पलताडनानि वा ॥

(कुमारसंभव)

स्फुटतु हृदयं कामः कामं करोतु तनुं तनुं न सखि चटुलप्रेम्णा कार्यं पुनर्दयितेन मे ॥ इति सरभसं मानोद्रेकादुदीर्य वचस्तया रमणपदवी सारंगाक्ष्या निरन्तरमीक्षिता ॥ ७१ ॥

“ हे सखि ! हृदय विदीर्ण हो जाय, मदन जितना चाहे शरीरको दुर्बल करे, क्षणभर प्रेम करनेवाले प्रियतमसे मुझे कुछ मतलब नहीं ” यों सहसा मानावेशसे वचन कहकर उस कुरं-गनयनीने रमणकी वाट निरन्तर देखी ॥ ७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । धृति, उत्सुकता संचारी भाव । कलहान्तरिता नायिका । अनुज्ञा अलंकार । हरिणी छंद ॥

गाढाश्लेषविशीर्णचन्दनरजःपुञ्जप्रकर्षादियं शय्या संप्रति कोमलांगि कठिनेत्यारोप्य मां वक्षसि ॥ गाढौष्ठग्रहपीडनाकुलतया पादाग्रसंदंशकेनाकृष्याम्बरमात्मनो यदुचितं धूर्तेन तत्प्रस्तुतम् ॥ ७२ ॥

"हे कोमलांगि, निर्भर आलिंगनसे छूटे हुए चंदनकी रजके पुंजके एकत्रित होनेसे अब यह शय्या कडी हो गई है" यों कह और मुझे छातीके पास ले जाकर उस धूर्तने स्वतंतासे अधरखंडनपूर्वक कामसे व्याकुल होकर पैरके अंगूठेके अंकडेसे वस्त्र खेंचकर जो उसके योग्य था वही किया ॥ ७२॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । स्वकीया प्रौढा नायिका । संभोग शृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । नायकका ललित सात्विक गुण । पर्यायोक्ति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छंद। तुलनार्थ-

मैं बरजी कै बार तू, इत कित लेति करौट ।
पखुरी गरै गुलाबकी, परि है गात खरौट ॥
(बिहारीसतसई)

कथमपि कृतप्रत्यासत्तौ प्रिये स्खलितोत्तरे विरहकृशया कृत्वा व्याजं प्रकल्पितमश्रु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तम्॥ असहनसखीश्रोत्रप्राप्तिं विशंक्य ससंभ्रमं विगलितदृशा शून्ये गेहे समुच्छ्वसितं पुनः ७३॥

(जब नायिकाने, नायकका दूसरी नायिकासे प्रेम जानकर उसे फटकार दिया तब बहुत दिन पीछे) किसी न किसी तरह नायिकाके सन्मुख पहुँचनेपर नायकने नायिकाको किसी दूसरी नायिकाके नामसे संबोधन किया तो विरहसे कृश हुई नायिका (समागमके लोभसे) किसी बहाने सुना अनसुना कर गई । परन्तु यह बात असहन सखीके कानमें पड जानेकी शंका करके परेशान हो जानेसे उसकी आंखोंमें आंसू आ गये और सूने घरमें जाकर वह लंबे २ सांस लेने लगी ॥७३॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोगशृंगार । कलहान्तरिता नायिका । उत्सुकता, शंका संचारी भाव । अश्रु सात्विक । पर्यायोक्तिअलंकार । हरिणी छंद ॥

आदृष्टिप्रसरात् प्रियस्य पदवीमुद्वीक्ष्य निर्विण्णया विच्छिन्नेषु पथिष्वहः परिणतौ ध्वान्ते समुन्मीलति ॥ दत्त्वैकं सशुचा गृहं प्रति पदं पान्थस्त्रियास्मिन् क्षणे माभूदागत इत्यमन्दवलितग्रीवं पुनर्वीक्षितः ॥ ७४ ॥

दुःखित पथिकवधूने जहांतक दृष्टि गई वहांतक दयितका मार्ग देखकर जब मार्गमें आने जानेवाले कम हो गये दिन पकने लगा और अंधेरा छाने लगा तब शोकसहित एक कदम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घरकी ओर रखकर 'इस क्षण तो पथिक कहीं न आया' यह सोच वेगसे गर्दन मोडकर फिर देखा ॥ ७४ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । प्रवास विप्रलंभशृंगार । मध्या प्रोषितपतिका नायिका । उत्सुकता विषाद संचारी भाव । शोक होनेसे यहां शृंगारका करुणाप्राय हो जाना अनुचित है । जाति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

आयाते दयिते मनोरथशतैर्नीत्वा कथंचि-
द्दिनं वैदग्ध्यापगमाज्जडे परिजने दीर्घां कथां
कुर्वति ॥ दष्टाहमीत्यभिधाय सत्वरतरं
व्याधूय चीनांशुकं तन्व्यङ्ग्या रतिकातरेण
मनसा नीतः प्रदीपः शमम् ॥ ७५ ॥

प्रियके आनेपर सैकडों मनोरथ करके किसी प्रकार दिन बिताया, फिर रसिकताके न होनेसे निर्बोध परिजन लंबी २ कहानियां कहने लगे । तब नायिकाने 'मुझे किसीने काट खाया' यों कहकर चीनेके महीन कपडेको जलदी २ हिलाडु-लाकर सुरतोत्सुक मनसे दिया बुझा दिया ॥ ७५ ॥

---

१ चीनके कपडेकी वर्णना प्राचीन काव्योंमें बहुत मिलती है, यथा—चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य (शाकुंतल) चीनांशुकैः कल्पितकेतुमालम् (कुमारसंभव) चीनांशुकमिव पीनस्तनजघनायाः कुलीनायाः (उद्भट) लोकमेंभी प्रसिद्ध है, यथा—अंगिया मोरी री मसकि गई चीन । (पण्डितअंबिकादत्तव्यास)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखीकी उक्ति सखीसे । प्रवासांतर संभोगशृंगार उत्सुकता संचारी भाव । आगतपतिका नायिका यथा-

आगतपतिका मुदित वहु, बहुरत पिय परदेस ।

किसीके काटनेके बहाने नायकसे मिलनेका कार्य साधनेसे पर्यायोक्ति । शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

अनालोच्य प्रेम्णः परिणतिमनादृत्य सुहृद-
स्त्वया मुग्धे मानः किमिति सरले प्रेयसि
कृतः ॥ समाकृष्टा ह्येते प्रलयदहनोद्भासुर-
शिखाः स्वहस्तेनाङ्गारास्तदलमधुनारण्यरु-
दितैः ॥ ७६ ॥

हे सरले, प्रेमका परिपाक देखे विना और सखियोंका निरादर करके तूने अनुचित अवसरपर प्रियसे क्यों मान किया ? ये प्रलयकालकी अग्निके भभकती ज्वालावाले अंगारे तूने अपने हाथसे खेंच लिये हैं (अर्थात् तूने पैरमें अपने आप कुल्हाडी मारी है) इसलिये अब अरण्यरोदनसे क्या लाभ है ? ॥७६॥

सखीकी उक्ति नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । दीनता संचारी भाव । अश्रु सात्विक । भेद उपेक्षा उपाय । यथा-

मान मुचावन बात तजि, कहिय और प्रसंग ।
छूटि जाइ जहँ मान तहँ, कहत उपेक्षा अंग ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कलहांतरिता मध्या नायिका । लोकोक्ति अलंकार यथा–

लोकप्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते ।

मान करनेसे विरहमें कामाग्निसे तप्त होना न कहकर उसका प्रतिबिंब प्रलयाग्निके अंगारे खेंचना कहनेसे ललित अलंकार यथा–

ललित कह्यौ कछु चाहिये, कहत तासु प्रतिबिंब ।

शिखरिणी छंद । तुलनार्थ–

मेरी सिख सीखे न सखि, मोसों रहत रिसाय ।
सोयौ चाहति नींद भरि, सेज अंगार बिछाय ॥

शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छनैर्निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम् ॥ विश्रब्धं परिचुंब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं लज्जानम्रमुखी प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता ॥ ७७ ॥

घर सूना देख, शय्यासे धीरे २ कुछ उठकर, कपटसे निद्रित हुए पतिका मुख बहुत कालतक देखकर बालाने निःशंक होकर चुंबन किया पर कपोलोंको रोमांचित देखकर जब लज्जासे उसने नीचा मुख कर लिया तब प्रियतमने मुसकुराकर उसका चिरकालतक चुंबन किया ॥ ७७ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । उत्सुकता, व्रीडा, हर्ष संचारी भाव । रोमांच सात्विक । सूना घर उद्दीपन विभाव ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चुंबन, आलिंगन अनुभाव । स्वाधीनपतिका मध्या नायिका । यथा—

मध्या विचित्रसुरता प्ररूढस्मरयौवना ।
ईषत्प्रगल्भवचना मध्यमव्रीडिता मता ॥

जाति अलंकार । परस्पर चुंबन करनेसे अन्योऽन्य । शार्दूलविक्रीडित छंद । समानभाव यथा—

लखि निर्जन भौन जरा उठि सैन सो, चूमे सनैं अधरैं सुखदाई ।
छल मीलित नैन सुपी मुखकौं, अवलोकतही पुलकावलि पाई ॥
जुत लाज भई झटि नम्र मुखी, छबि वा कविसों बरनी कब जाई।
वश आनँदके हस साहससौं, शशिकीसी कली चिर कंठ लगाई॥

जाता नोत्कलिका स्तनौ न लुलितौ गात्रं न रोमाञ्चितं वक्त्रं स्वेदकणाञ्चितं न सहसा यावच्छठेनामुना ॥ दृष्टेनैव मनो हृतं धृतिमुषा प्राणेश्वरेणाद्य मे तत्केनापि निरूप्यमाननिपुणो मानः समाधीयताम् ॥ ७८ ॥

न उत्कंठा हुई, न कुच कंपायमान हुए, न शरीर रोमांचित हुआ, न मुखपर पसीनेकी बूंदें प्रकट हुई, तबतकही आज सहसा इस शठ, धैर्य चुरानेवाले प्राणेश्वरने, देखतेही मन हर लिया । फिर किस उपायसे भली भांति देख भालकर मानको स्थिर करूं ? ॥ ७८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नायिकाकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । हर्ष संचारी भाव । उत्तमा नायिका, यथा—

स्वप्रिय दोष लखि उत्तमा, धरै न मनमें रोष ।

उत्सुकता, कंप, रोमांच, स्वेदके न होनेपरभी मनके वशमें न रहनेसे विभावना अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छंद । तुलनार्थ -

तुहू कहति हौं आपहू, समझति बहुत सयान ।
लखि मोहन जौ मन रहे, तौ मन राखौं मान ॥
चख रुचि चूरन डारिकै, ठग लगाय निज साथ ।
रह्यौ राखि हठ लै गयौ, हथाहथी मन हाथ ॥
(बिहारीसतसई.)

**दृष्टः कातरनेत्रया चिरतरं बद्धाञ्जलि याचि-
तः पश्चादंशुकपल्लवेन विधृतो निर्व्याजमा-
लिंगितः ॥ इत्याक्षिप्य यदा समस्तमघृणो
गन्तुं प्रवृत्तः शठः पूर्वं प्राणपरिग्रहो दयितया
मुक्तस्ततो वल्लभः ॥ ७९ ॥**

चिरकालतक कातर नेत्रोंसे देखा, हाथ जोडकर प्रार्थना की, फिर वस्त्रका पल्ला पकडकर रोका, फिर गाढ आलिंगन किया । इन सबकी उपेक्षा करके जब वह निष्करुण शठ जानेको तैयार हो गया तब दयिताने पहले जीवनकी आशाको बिदा किया और पीछे पतिको ॥ ७९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखीकी उक्ति सखीसे । प्रवास विप्रलंभ शृंगार । प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । शठ नायक । दीनता संचारी भाव । कारकदीपक । जीवनकी आशाका पहले त्याग करनेसे पूर्व अलंकार । पतिके जानेके पहलेही जीवनाशा छोडनेसे अत्यंतातिशयोक्ति, यथा–

अत्यंतातिशयोक्ति जहँ, हेतु पूर्वही काज ।

वियोगकी एकादश अवस्थाका वर्णन यथा–

तिय पियमें जब होत है, कौनिहुं भांति वियोग ।
मिलन निराशा होत तब, दशा मरणको योग ॥

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

अङ्गुल्यग्रनखेन बाष्पसलिलं निक्षिप्य निक्षिप्य किं तूष्णीं रोदिषि कोपने बहुतरं फूत्कृत्य रोदिष्यसि ॥ यस्यास्ते पिशुनोपदेशवचनैर्मानेऽतिभूमिं गते निर्विण्णाऽनुनयं प्रति प्रियतमो मध्यस्थतामेष्यति ॥ ८० ॥

हे कोपने ! अंगुलिके अग्रनखसे बाष्पजलको पोंछ २ कर क्यों चुपचाप रोती है ? जब दुष्टोंके सिखानेसे तेरा मान अंतिम सीमाको पहुँच जायगा और पति विरक्त होकर बहुमानके विषयमें उदासीन हो जायगा तब तो तू खूब जोरसे रोवेगी ॥ ८० ॥

सखीकी उक्ति नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अश्रु सात्विक । अवहित्थ, विषाद संचारी भाव । मध्या कलहांतरिता नायिका । भेद उपाय । भविष्य उदासीनता और रोदनको जताकर मान करना वर्जनेसे भविष्यत्आक्षेप अलंकार यथा–

कारजके आरंभही, जहँ कीजत प्रतिषेद ।
आछेपक तासों कहत, बहु विधि बरनि सुभेद ॥
तीनिहु काल बखानियै भयौ जु भावी होत ।

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

तद्वक्त्राभिमुखं मुखं विनमितं दृष्टिः कृता पादयोः तस्यालापकुतूहलाकुलतरे श्रोत्रे निरुद्धे मया ॥ पाणिभ्यां च तिरस्कृतः सपुलकः स्वेदोद्गमो गण्डयोः सख्यः किं करवाणि यान्ति शतधा यत्कंचुके संधयः ॥ ८१ ॥

उसके मुखके सामने अपना मुख नीचा कर लिया, दृष्टि चरणोंकी ओर कर ली, उसके वचन सुननेके चावसे आकुल हुए कान बंद कर लिये, गालोंपर जो रोंगटे खडे हो गये थे और पसीना आ गया था उसे हाथसे ढक लिया पर हे सखियो ! मैं करूं क्या, आंगीकी सीमन तो सौ सौ वार फटती है ॥ ८१ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । संभोग शृंगार । रोमांच, स्वेद सात्विक । कलहान्तरिता नायिका । उत्सुकता, हर्ष, अवहित्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संचारी भाव । उत्तर सुनतेही प्रश्नका बोध होनेसे उत्तर अलंकार । यत्नाक्षेप । मान प्रकट करनेके लिये मुख नीचा करना, दृष्टि चरणोंकी ओर करना, आदि दृढ उपाय करनेपरभी मान न हुआ । (आंगीके फटनेसे हर्ष प्रकट हो गया), इससे यहां विशेषोक्ति अलंकार है । शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ समान भाव यथा—

जाके मुख सामुहे भयोई जो चहत मुख लीन्हों सो नवाइ डीठ पगन अबांगीरी । बैन सुनवेको अति व्याकुल हुते जो कान तेऊ मूंदि राखे मजा मनहूं न मागी री ॥ झारि डार्‍यौ पुलकि पसेदहु निवारि डार्‍यौ रोक रसनाहू त्यौं भरी न कछू हांगीरी । एतेपै रह्यौ न मान मोहन भटूपै लटू टूक टूक ह्वैकै ज्यों छटूक गई आंगीरी ॥ तुलनार्थ—

वक्षसि विजृंभमाणे स्तनभिन्नं त्रुटति कंचुकं तस्याः ।
पूर्वदयितानुरागस्तव हृदि न मनागपि त्रुटति ॥
(आर्यासप्तशती.)

मा गच्छ प्रमदाप्रिय प्रियशतैरभ्यार्थितस्त्वं मया
बाला प्रांगणमागतेन भवता प्राप्नोत्यवस्थां पराम् ॥
किं चास्याः कुचभारनिःसहतरैरंगैरनंगोज्ज्वलै-
स्त्रुटचत्कंचुकजालकैरनुदिनं निःसूत्रमस्मद्गृहम् ॥
(सुभाषितरत्नभाण्डागार.)

कृतो दूरादेव स्मितमधुरमभ्युद्गमविधिः शि-
रस्याज्ञा न्यस्ता प्रतिवचनमुच्चैः प्रणमितम् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न दृष्टेः शैथिल्यं मिलन इति चेतो दहति मे निगूढान्तःकोपा कठिनहृदये संवृतिरियम् ॥ ८२ ॥

दूरसेही तूने स्मितसे मनोहर अभ्युत्थान दिया, आज्ञा शिरपर धारण की, भली भांति प्रत्युत्तर दिया, दृष्टिके मिलानेमेंभी शिथिलता नहीं की, इसलिये हे कठिनहृदये, भीतरी क्रोधको छुपाती तेरी आकारगुप्ति मेरे चित्तका दहन करती है॥ ८२ ॥

नायककी उक्ति नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । प्रौढा धीरा नायिका । अवहित्थ संचारी भाव । नायिकाकी आकारगुप्तिसे भीतरी क्रोधका अनुमान करनेसे अनुमान अलंकार । नायिकाका आदर भाव प्रसन्न होनेका कारण होनेपरभी नायकके प्रसन्न न होनेसे विशेषोक्ति । औदार्यनाटचालंकार । शिखरिणी छंद ॥

एकस्मिन् शयने विपक्षरमणीनामग्रहे मुग्धया सद्यः कोपपराङ्मुखं शयितया चाटूनि कुर्वन्नपि॥ आवेगादवधीरितः प्रियतमस्तूष्णीं स्थितस्तत्क्षणान्माभूत्सुप्त इवैष मन्दवलितग्रीवं पुनर्वीक्षितः ॥ ८३ ॥

एकही शय्यामें पतिके सपत्नीका नाम लेनेपर तत्काल कोपसे मुख फेरकर सोती हुई मुग्धाने जब खुशामद करते प्रियतम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीभी आवेगसे ऐसी अवज्ञा की कि वह चुप हो गया तब 'यह कहीं गुस्सा न हो जाय' यह सोच झट गर्दन मोडकर नायिकाने उसे फिर देखा ॥ ८३ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार दर्शनात्मा संभोग शृंगारमें बदल गया है । शठ नायक । मुग्धा कलहान्तरिता नायिका । मध्यम मान । साम, उपेक्षा उपाय । चिंता संचारी भावपोषित उत्सुकता संचारी भावका उदय । जाति अलंकार । नायिकाको प्रसन्न करनेकी कामनासे उसकी खुशामद करनेपरभी उलटी अवज्ञा हो जानेसे विषाद अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ तुलनार्थ–

तिरस्कृतो रोषवशात्परिष्वजन् प्रियो मृगाक्ष्या शयितः पराङ्मुखः । किं दुःखितोसाविति कान्दिशीकया कदाचिदाचुम्ब्य चिराय सस्वजे ॥

(भामिनीविलास)

मलयमरुतां व्राता वाता विकासितमल्लिका-
परिमलभरो भग्नो ग्रीष्मस्त्वमुत्सहसे यदि ॥
घन घटयितुं तं निःस्नेहं य एव निवर्तने प्रभ-
वति गवां किं नश्छिन्नं स एव धनञ्जयः ॥८४॥

हे घन ! मलयानिल वह चुकीं, खिली हुई मल्लिकाके परिमलसे भरा हुआ ग्रीष्मकालभी हो चुका (अर्थात् वसंत और ग्रीष्मके उद्दीपन उपचार होनेपरभी नायक नहीं आया इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये) यदि तुम उस निःस्नेहको मिलानेका उद्योग करो तो जो धन (गौओंको) लौटानेमें समर्थ हो वही धंनंजय है, हमारा क्या विगडा है अर्थात् हम तो जीवित हैं ही ॥ ८४ ॥

प्रोषितपतिकाकी मेघसे उक्ति । वियोगकी प्रलाप दशा । प्रवास विप्रलंभ शृंगार । दीनता संचारी भाव । लोकोक्ति अलंकार । संभावनाभी है, यथा–

जो यों होइ तो यों कहे, संभावना विचार ।

हरिणी छंद ॥

दृष्ट्वा करजक्षतं मधुमदक्षीबा विचार्येर्ष्यया गच्छन्तो क्व नु गच्छसीति विधृता बाला पटान्ते मया ॥ प्रत्यावृत्तमुखी सबाष्पनयना मां मुंच मुंचेति सा कोपात्प्रस्फुरिताधरा यदवदत्तत्केन विस्मर्यते ॥ ८५ ॥

मदिराके मदसे मत्त हुई कान्ता अपने नखोंके चिह्न देखकर ईर्ष्याके कारण विना विचारे जाने लगी तब 'कहां जाती है' यों कहकर मैंने वस्त्रका पला पकडकर उसे रोका । मुख फेरकर और आंखोंमें आंसू भरकर उसने 'छोडो २' यों कोपसे होठ फडकाकर जो मुझसे कहा उसे कौन भूल सकता है?॥८५॥

नायककी उक्ति सखासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार ।

---

१ धनंजय=अर्जुन । कौरवोंने विराटदेशके राजाकी गौएं हर ली थीं । अर्जुन उन्हें लौटाकर लाया था ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विरही नायक । अश्रु, कंप सात्विक । आवेग, मद संचारी भाव । जाति अलंकार । शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

सालक्तकं शतदलाधिककान्तिरम्यं रत्नौघ-
धामनिकरारुणनूपुरं च ॥ क्षिप्तं भृशं कुपि-
तया तरलोत्पलाक्ष्या सौभाग्यचिह्नमिव मूर्ध्नि
पदं विरेजे ॥ ८६ ॥

चंचल नेत्रोत्पलवाली अत्यंत कुपित नायिकासे (नायकके) सिरपर रक्खा गया, महावर लगा, कमलसेभी अधिक कान्तिसे मनोहर, बहुतसे रत्नोंके कांतिपुंजसे अरुण हुए नूपुरोंसे युक्त, चरण सौभाग्यचिह्नसा शोभायमान हुआ ॥ ८६ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । प्रौढा अधीरा नायिका । धृष्ट नायक । चरण उपमेय, सौभाग्यचिह्न उपमान, सा वाचक, शोभायमान होना धर्म, इन चारोंके होनेसे पूर्णोपमा अलंकार । वसन्ततिलका छंद ॥

कपोले पत्राली करतलनिरोधेन मृदिता नि-
पीतो निःश्वासैरयममृतहृद्योऽधररसः ॥ मुहुः
कण्ठे लग्नस्तरलयति बाष्पः स्तनतटं प्रियो
मन्युर्जातस्तव निरनुरोधे न तु वयम् ॥ ८७ ॥

हथेलीके सहारे मुख रखनेसे गालोंके ऊपर बने हुए बेल-बूटे पुंछ गये, सुधाके समान स्वादु यह अधररस निःश्वासोंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुखा दिया, और कंठमें रुका हुआ बाष्प स्तनतटको कंपाता है, हे निरनुरोधे ! मन्यु तेरा प्रिय हो गया है, हम नहीं ॥ ८७ ॥

नायककी उक्ति नायिकासे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । चिंता संचारी भाव । वैवर्ण्य सात्विक । मध्या धीराधीरा नायिका । यथा—

प्रियं सोत्प्रासवक्रोक्त्या मध्या धीरा दहेद्रुषा ।
धीराधीरा तु रुदितैरधीरा परुषोक्तिभिः ॥

अधररस उपमेय, सुधा उपमान, समान वाचक, स्वादु धर्म चारोंके होनेसे पूर्णोपमा । प्रिय होना धर्म नायकमेंसे वर्जकर क्रोधमें ठहरानेसे परिसंख्या अलंकार । शिखरिणी छंद ।

तुलनार्थ—

चिरं पत्रलतालेख्यं विहाय क्रियते नवम् ।
मंडनं गंडयोरश्रुकणमुक्तावली तया ॥
मृदुः स्वभावरक्तश्च प्रवृद्धैरसमोष्माभिः ।
म्लानिमानीयते तस्या निःश्वासैरधरः खरैः ॥

(कादंबरीकथासार)

लाक्षालक्ष्म ललाटपट्टमभितः केयूरमुद्रा गले वक्त्रे कज्जलकालिमा नयनयोस्ताम्बूलरागोदयः ॥ दृष्ट्वा कोपविधायि मण्डनमिदं प्रातश्चिरं प्रेयसो लीलातामरसोदरे मृगदृशः श्वासाः समाप्तिं गताः ॥ ८८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ललाटपट्टपर (अन्य स्त्रीके चरणोंमें गिरनेसे लगा हुआ) महावरका चिह्न, कंठमें (आलिंगनसूचक) बाजूबंदकी रेखा, मुखमें (नायकद्वारा चुंबनसूचक) काजलकी मलिनता, और नेत्रोंमें (नायिकाद्वारा चुंबनसूचक) ताम्बूलका रंग यह प्रियतमका कोप उत्पन्न करनेवाला शृंगार सबेरे बहुत देरतक देखकर कुरंगलोचनीके श्वास लीलाकमलके भीतरही समाप्त हो गये अर्थात् वह लीलाकमल सूंघती मूर्छित हो गई ॥ ८८ ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । अवहित्थ संचारी भाव । खंडिता नायिका । अनेक चिह्नरूपी साधनोंद्वारा मूर्छित होनेसे समुच्चय, यथा–

एक काज चाहे कर्‍यौ, ह्वै अनेक इक अंग ।

ललाटपर महावर इत्यादिसे और स्थानका काम और स्थानमें होनेसे असंगति । शार्दूलविक्रीडित छंद । तुलनार्थ–

पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल ।
आज मिले सुभली करी, भले बने हो लाल ॥
कत बेकाज चलाइयत, चतुराईकी चाल ।
कहै देति गुन रावरे, सब गुण निर्गुण माल ॥

(बिहारीसतसई)

तप्ते महाविरहवह्निशिखावलीभिरापाण्डुर-
स्तनतटे हृदये प्रियायाः ॥ रथ्यालिवीक्षण-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निवेशितलोलदृष्टेर्नूनं छनच्छनिति बाष्पकणाः पतन्ति ॥ ८९ ॥

दीन दृष्टिसे गलियोंको देखती हुई प्रियाके वियोगानलकी बडी २ ज्वालाओंसे तपते तथा पाण्डुरस्तनतटवाले हृदयपर आसूकी बूंदें मानो छनछन करके पडती हैं ॥ ८९ ॥

वियोगीकी उक्ति सखासे । प्रवास विप्रलंभ शृंगार । अश्रु सात्विक । हृदयपर बूंदोंका छन २ करके पडना उत्प्रेक्षित होनेसे उत्प्रेक्षा । आंसू गिरनेका असामान्य वर्णन होनेसे अत्युक्ति । वसंततिलका छंद । तुलनार्थ–

पलनि प्रगटि बरुनीनि बढि, क्षण कपोल ठहराय ।
अंसुआ परि छतिया क्षणक, छनछनाय छिप जाय ॥
(बिहारीसतसई)

चिन्तामोहविनिश्चलेन मनसा मौनेन पादानतः प्रत्याख्यानपराङ्मुखः प्रियतमो गन्तुं प्रवृत्तोऽधुना॥सव्रीडैरलसैर्निरन्तरलुठद्बाष्पाकुलैर्लोचनैः श्वासोत्कम्पकुचं निरीक्ष्य सुचिरं जीवाशया वारितः ॥ ९० ॥

चरणोंमें पडा और तिरस्कार करनेसे विमुख हुआ प्रियतम अभी जानेको तैयार हुआ तो लंबे २ सांस लेकर कंपित कुचवाली नायिकाने लज्जासहित, अलस तथा निरंतर गिरते आंसुओंसे आकुल नेत्रोंसे चिरकालतक देखकर और चिन्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा मोहसे निश्चल मनसे तथा चुपचाप रहकर जीवनकी आशासे उसे रोक लिया ॥ ९० ॥

सखीकी उक्ति सखीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । स्तंभ, अश्रु, कंप सात्विक । विषाद संचारी भाव । मध्या प्रवत्स्यत्पतिका नायिका । थोडेही प्रयाससे नायकको रोक लेनेसे विशेष अलंकार । अधैर्याक्षेप । शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ तुलनार्थ–

सव्यलीकमवधीरितखिन्नं प्रस्थितं सपदि कोपपदेन ।
योषितः सुहृदिव स्म रुणद्धि प्राणनाथमभिवाष्पनिपातः ॥
(किरातार्जुनीय)

तन्वङ्ग्या गुरुसन्निधौ नयनजं यद्वारि संस्त-
म्भितं तेनान्तर्गलितेन मन्मथशिखी सिक्तो
वियोगोद्भवः ॥ मन्ये तस्य निरस्यमानकिर-
णस्यैषा मुखेनोद्गता श्वासामोदसमाकुलालि-
निकरव्याजेन धूमावलिः ॥ ९१ ॥

तन्वंगीने बडे बूढोंके सामने आंखोंमें जो जल रोका उसने भीतरही रिसकर वियोगजनित कामाग्निको सींचा और उस

---

१ यथा–आशाबंधः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यंगनानां । सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ॥ (मेघदूत) आशातन्तुर्न च कथयतात्यंतमुच्छेदनीयः । प्राणत्राणं कथमपि करोत्यायताक्ष्याः स एकः ॥ (मालतीमाधव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अग्निकी ज्वालाके बुझनेसेही मानों श्वासकी सुगंधसे व्याकुल हुए भ्रमरोंकी कतारके बहाने मुखमेंसे धूमावली निकली ॥ ९१॥

विरहीकी उक्ति । विप्रलंभ शृंगार । धृति संचारी भाव । वियोगिनी नायिकाके श्वासमें कमलकी सुगंध होनेसे पद्मिनी है यथा–

पद्मिनी पद्मगंधा च मीनगंधा च चित्रिणी ।
शंखिनी क्षारगंधा च मदगंधा च हस्तिनी ॥

भ्रमरोंकी पंक्तिमें धूमावलीकी संभावना करनेसे उत्प्रेक्षा । यथा–

केशव औरै वस्तुमें, औरहि कीजै तर्क ।
उत्प्रेक्षा तासों कहैं, जिनकी बुधि संपर्क ॥

भ्रमरोंको धूमावली बतानेसे कैतवापह्नुति, यथा–

कैतवपह्नुति एककों, मिस करि बरणत आन ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥ तुलनार्थ–

उन्मुकुलिताधरपुटे भूतिकणत्रासमीलिताधाँक्षे ।
धूमोऽपि नेह विरम भ्रमरोऽयं श्वसितमनुसरति ॥

(आर्यासप्तशती)

भ्रूभेदो रचितश्चिरं नयनयोरभ्यस्तमामीलनं
रोद्धुं शिक्षितमादरेण हसितं मौनेऽभियोगः
कृतः ॥ धैर्यं कर्तुमपि स्थिरीकृतमिदं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चेतः कथञ्चिन्मया बद्धो मानपरिग्रहे परिकरः सिद्धिस्तु दैवे स्थिता ॥ ९२ ॥

भ्रुकुटि चढाना बहुत कालतक गुना, नेत्र संकुचित करनेका अभ्यास किया, यत्नपूर्वक हँसी रोकना सीखा, चुप रहनेकी कोशिश की, धीरज धरनेके लियेभी किसी भांति इस चित्तको मैंने स्थिर कर लिया, इस प्रकार मान करनेके लिये मैंने कमर कस ली है परन्तु सिद्धि तो दैवके अधीन है ॥ ९२ ॥

नायिकाकी उक्ति सखीसे । प्रणयमानात्मक विप्रलंभ शृंगार । कलहांतरिता नायिका । उत्सुकता संचारी भाव । कारकदीपक । आक्षेप अलंकारका आभास, यथा–

पहले कहिये आप कछु, बहुरि फेरिये तासु ।

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

देशैरन्तरिता शतैश्च सरितामुर्वीभृतां काननैर्यत्नेनापि न याति लोचनपथं कान्तेति जानन्नपि ॥ उद्ग्रीवश्चरणार्द्धरुद्धवसुधः कृत्वाश्रुपूर्णे दृशौ तामाशां पथिकस्तथापि किमपि ध्यायन्मुहुर्वीक्षते ॥ ९३ ॥

सैकडों देश, नदी, पर्वत और वनोंके बीचमें होनेसे दूरवर्तिनी कान्ता यत्न करनेपरभी दृष्टिगोचर न होगी यह जानताभी पथिक ऊंची गर्दन करके (उचकनेके कारण) आधे पैरोंसे घर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोपर खडा होकर, आंसू वहाती आंखोंको पोंछकर, कुछ ध्यान करता हुआ उसी दिशाकी ओर वार २ देखता है ॥९३॥

प्रवास विप्रलंभ शृंगार । अश्रु सात्त्विक । उत्सुकता संचारी भाव । चिंता संचारी भाव उसका सहकारी । विरही नायक । जाति अलंकार । नायिकाका दृष्टिगोचर न होना जाननेपरभी देखना बंद न होनेसे विशेषोक्ति । शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

कोपस्त्वया हृदि कृतो यदि पङ्कजाक्षि सोऽ-
स्तु प्रियस्तव किमत्र विधेयमन्यत् ॥ आश्ले-
षमर्पय मदर्पितपूर्वमुच्चैर्मह्यं समर्पय मदर्पि-
तचुम्बनं च ॥ ९४ ॥

हे कमलनयने ! तूने हृदयमें जो क्रोध धारण किया है वही तुझे प्रिय हो, अब और क्या करना है ? मेरे पहले दिये हुए गाढ आलिंगनको मुझे लौटा दे और मेरे दिये चुंबन मेरे समर्पण कर ॥ ९४ ॥

नायककी उक्ति मानिनीसे । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभ शृंगार । वचनचतुर नायक, यथा–

वचनचतुर साधत सदा, चतुर उक्तिसों काज ।

वक्रोक्ति अलंकार, यथा–

केशव सूधी बाततें, बरणत टेढो भाव ।
वक्रोकति तासों कहत, सदा सबै कविराव ॥

पर्यायोक्ति । वसंततिलका छंद ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऊरुद्वयं मृगदृशः कदलस्य काण्डौ मध्यं च वेदिरतुलं स्तनयुग्ममस्याः ॥ लावण्यवारि-परिपूरितशातकुम्भकुम्भौ मनोजनृपतेर-भिषेचनाय ॥ ९८ ॥

मृगनयनीके दोनों ऊरु केलेके खंभ हैं, इसका मध्यभाग वेदि[1] (अर्थात् वेदिके समान बीचमें कृश) है, तथा इसके दोनों अनुपम स्तन कामदेव राजाके अभिषेकके लिये लावण्य-वारिसे भरे सोनेके कलश हैं ॥ ९८ ॥

कविकी उक्ति । संभोग शृंगार । रूपक अलंकार । यथा–

उपमान रु उपमेयमें, भेद परै न लखाय ।
तासों रूपक कहत हैं, सकल सुकविसमुदाय ॥

वसंततिलका छंद ॥ तुलनार्थ–

जंघयुगल लोयन निरे, करे मनौ विधि मैन ।
केलि तरुन दुख दैन ये, केलि तरुन सुख दैन ॥
(विहारीसतसई)

चपलहृदये किं स्वातन्त्र्यात्तथा गृहमागत-श्चरणपतितः प्रेमार्द्रार्द्रः प्रियः समुपेक्षितः ॥

---

१ मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या वलित्रयं चारु बभार बाला ।
(कुमारसंभव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तदिदमधुना यावज्जीवं निरस्तसुखोदया रुदि-
तशरणा दुर्जातानां सहस्व रुषां फलम् ॥ ९६ ॥

हे चपलहृदये ! क्यों तूने अपने आप घरपर आये हुए, चरणोंमें पडे तथा प्रेमार्द्र प्रियतमकी उपेक्षा की ? इस कारण अब तेरे जीवनका सब सुख जाता रहा और केवल रोदनकीही तुझे शरण लेनी पडी । दुष्ट क्रोधका फल भोग ॥ ९६ ॥

सखीकी उक्ति नायिकासे । नायिका मध्या कलहांतरिता । ईर्ष्यामानात्मक विप्रलंभशृंगार । विषाद संचारी भाव । " चपलहृदय " शब्द साभिप्राय होनेसे परिकर, यथा—

है परिकर आशय लिये, जहां विशेषण होइ ।

हेतु अलंकारभी है । हरिणी छंद ॥ तुलनार्थ—

सो हैं हू चाह्यौ न तैं, केती घाई सौंह ।
एहो क्यों बैठी किये, ऐंठी ग्वैंठी भौंह ॥

(विहारीसतसई)

रात्रौ वारिभरालसाम्बुदरवोद्विग्नेन जाताश्रुणा पान्थेनात्मवियोगदुःखपिशुनं गीतं तथोत्कंठया ॥ आस्तां जीवितहारिणः प्रवसनालापस्य संकीर्तनं मानस्यापि जलाञ्जलिः सरभसं लोकेन दत्तो यथा ॥ ९७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात्रिको जलके भारसे अलस हुए मेघकी गर्जनासे उद्विग्न और आंसू बहाते पथिकने आत्मवियोगदुः चक गीत ऐसी उत्कंठासे गाया कि प्राणनाशक प्रवासकी बात तो एक ओर रहे, मानतकको लोगोंने तत्काल जलकी अंजली देदी ॥ ९७ ॥

कविकी उक्ति । प्रवास विप्रलंभशृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । विरही नायक । मेघशब्द उद्दीपन विभाव । अश्रु सात्विक । नायिकावियोग आलंबन विभाव । विरहगानसे मानका छोडना विपरीत फल हुआ, इससे विषम अलंकार विरही नायकके विरहके गीत गानेसे अन्य लोगोंका मान छूटनेमें असंगति अलंकार । काव्यार्थापत्तिभी है, यथा—

काव्यार्थापति यह कियौ, ताकों यह कहा बात ।

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

हारो जलार्द्रवसनं नलनीदलानि प्रालेयशी-करमुचस्तुहिनांशुभासः ॥ यस्येन्धनानि सरसानि च चन्दनानि निर्वाणमेष्यति कथं स मनोभवाग्निः ॥ ९८ ॥

हार, जलसे गीला वस्त्र, कमलके पत्ते, हिमकण, वरसाती चंद्रमाकी किरणें और सरस चंदन ये जिसका ईंधन हैं ऐसी कामाग्नि कैसे शान्त होगी ? ॥ ९८ ॥

विरहीकी उक्ति । विप्रलंभशृंगार । उत्सुकता संचारी भाव । विरोधाभास, यथा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरणत लगै विरोध सौ, अर्थ सबै अविरोध ।
प्रकट विरोधाभास यह, समुझत सबै सुबोध ॥

अग्नि शांत करनेवाली वस्तुओंसे अग्निका जलना कहनेसे व्याघात । वसंततिलका छंद ॥

तन्वी शरत्त्रिपथगा पुलिने कपोलौ लोले दृशौ रुचिरचञ्चलखंजरीटौ ॥ तद्बन्धनाय सुचिरार्पितसुभ्रुचापचाण्डालपाशयुगलाविव शून्यकर्णौ ॥ ९९ ॥

यह तन्वी शरत्कालकी गंगा है, कपोल रेतीके किनारे हैं, चंचल नेत्र सुंदर चंचल खंजन है। उनके बांधनेके लिये जिसने बहुत कालसे भ्रुकुटिरूप धनुष तान रक्खा है ऐसे चांडाल (कामदेव) के दो पाशही बीचमें खाली कान हैं ॥ ९९ ॥

संभोग शृंगार । रूपक अलंकार । उपपति नायक । शरत्कालकी गंगासे नायिकाकी समता करनेसे विरहिणी नायिका है क्योंकि शरत्कालकी नदी सूक्ष्म हो जाती है और विरहिणीके अंग दुर्बल हो जाते हैं । नेत्रोंके चंचल होनेसे चित्रिणी है, यथा—

नृत्य गीत कविता रुचै, अचल चित्त चल दृष्ट ।
बहिरति रत अति सुरति जल, मुख सुगंधकी सृष्ट ॥
विरल लोम तन मदनगृह, भावत सकल सुवास ।
मित्र चित्र प्रिय चित्रिणी, जानहु केशव दास ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वसंततिलका छंद ॥ तुलनार्थ–

अधरे मधुरा सरस्वती हृदि गंगा तदधः कलिंदजा ।
शिरसि प्रतिभाति चारुवेणी कथमेणीनयना न तीर्थराजः॥

(उद्भट)

हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले ॥
मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिंकराः १००॥

इत्यमरुशतकं संपूर्णम् ।

यह हार मृगनयनीके स्तनमंडलमें लोटता है । जब मोतियोंकीभी यह अवस्था है तब हम कामके किंकर किस गिनतीमें हैं ? ॥ १०० ॥

संकेत इस श्लोकमें "मुक्तानां" शब्द श्लिष्ट है । आशय यह है कि जब मुक्त जीवन्मुक्त विरक्तभी कामसे छुटकारा न पा सके तब हमारी क्या है, हम तो कामके दास बने बनाये हैं ।

कविकी उक्ति । संभोग शृंगार । काव्यार्थापत्ति अलंकार ।

अनुष्टुप् छंद ॥ तुलनार्थ–

तव वृत्तेन गुणेन च समुचितसंपन्नकंठलुठनायाः ।
हारस्रज इव सुंदरि कृतः पुनर्नायकस्तरलः ॥

(आर्यासप्तसती.)

इति भाषाटीकासहितं अमरुशतकं समाप्तम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिशिष्ट.

नापेतोऽनुनयेन यः प्रियसुहृद्वाक्यैर्न यः संहृतो ।
यो दीर्घं दिवसं विषह्य विषमं यत्नात्कथंचिद्धृतः ॥
अन्योन्यस्य हृते मुखे निहितयोस्तिर्यक्कथंचिद्दृशोः ।
स द्वाभ्यामतिविस्मृतव्यतिकरो मानो विहस्योज्झितः॥१०१॥

आस्तां विश्वसनं सखीषु विदिताभिप्रायसारे जने ।
तत्राप्यर्पयितुं दृशं सुरचितां शक्नोमि न व्रीडया ॥
लोकोऽप्येष परोपहासचतुरः सूक्ष्मेङ्गितज्ञोऽप्यलं ।
मातः कं शरणं व्रजामि हृदये जीर्णोऽनुरागानलः ॥ १०२ ॥

आलम्ब्याङ्गणवाटिकापरिसरे चूतद्रुमे मञ्जरीं ।
सर्पत्सान्द्रपरागलम्पटरटद्भृंगांगनाशोभिनीम् ॥
मन्ये स्वां तनुमुत्तरीयशकलेनाच्छाद्य बाला स्फुरत् ।
कंठध्वाननिरोधकंपितकुचश्वासोद्गमा रोदिति ॥ १०३ ॥

लोलद्भ्रूलतया विपक्षदिगुपन्यासेऽवधूतं शिरः ।
स्तद्वृत्तान्तनिरीक्षणे कृतनमस्कारो विलक्षः स्थितः ॥
कोपाताम्रकपोलभित्तिनि मुखे दृष्ट्यागतः पादयो- ।
रुत्सृष्टो गुरुसंनिधावपि विधिर्द्वाभ्यां न कालोचितः ॥१०४॥

म्लानं पाण्डुकृशं वियोगविधुरं लम्बालकं सालसं ।
भूयस्तत्क्षणजातकान्तिरभसप्राप्ते मयि प्रोषिते ॥
साटोपं रतिकेलिकालसरसं रम्यं किमप्यादरा- ।
द्यत्पीतं सुतनोर्मया वदनकं वक्तुं न तत्पार्यते ॥ १०५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करकिसलयं धूत्वा धूत्वा विमार्गति वाससी ।
क्षिपति सुमनोमालाशेषं प्रदीपशिखां प्रति ॥
स्थगयति मुहुः पत्युर्नेत्रे विहस्य समाकुला ।
सुरतविरतौ रम्या तन्वी मुहुर्मुहुरीक्षते ॥ १०६ ॥

सन्त्येवात्र गृहे गृहे युवतयस्ताः पृच्छ गत्वाधुना ।
प्रेयांसः प्रणमंति किं तव पुनर्दासो यथा वर्तते ।
आत्मद्रोहिणि दुर्जनैः प्रलपितं कर्णेऽनिशं मा कृथाः ।
छिन्नस्नेहरसा भवंति पुरुषा दुःखानुवर्त्याः पुनः ॥ १०७ ॥

निःश्वासा वदनं दहंति हृदयं निर्मूलमुन्मथ्यते ।
निद्रा नैति न दृश्यते प्रियमुखं नक्तं दिवं रुद्यते ॥
अंगं शोषमुपैति पादपतितः प्रेयांस्तदोपेक्षितः ।
सख्यः कं गुणमाकलय्य दयिते मानं वयं कारिताः १०८॥

अद्यारभ्य यदि प्रिये पुनरहं मानस्य वान्यस्य वा ।
गृह्णीयां शठदुर्नयेन मनसा नामापि संक्षेपतः ॥
तन्मे नैव विना शशांकधवलाः स्पष्टाट्टहासा निशा ।
एको वा दिवसः पयोदमलिनो यायान्मम प्रावृषि ॥ १०९ ॥

चरणपतनं सख्यालापा मनोहरचाटवः ।
कृशतरतनोर्गाढाश्लेषो हठात्परिचुम्बनम् ॥
इति हि चपलो मानारंभस्तथापि हि नोत्सहे ।
हृदयदयितः कान्तः कामं किमत्र करोम्यहम् ॥ ११० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अहं तेनाहूता किमपि कथयामीति विजने ।
समीपे चासीना सरसहृदयत्वादवहिता ॥
ततः कर्णोपान्ते किमपि वदताघ्राय वदनं ।
गृहीत्वा धम्मिल्ले सखि स च मया गाढमधरे ॥ १११

चक्षुःप्रीतिप्रसक्ते मनसि परिचये चिन्त्यमानाभ्युपाये ।
रागे यातेऽतिभूमिं विकसति सुतरां गोचरे दूतिकायाः ॥
आस्तां दूरेण तावत्सरभसदयितालिंगनानंदलाभ- ।
स्तद्गेहोपान्तरथ्याभ्रमणमपि परां निर्वृतिं संतनोति १

कान्ते तल्पमुपागते विगलिता नीवी स्वयं बंधना- ।
द्वासो विश्लथमेखलागुणधृतं किंचिन्नितंबे स्थितम् ॥
एतावत्सखि वेद्मि सांप्रतमहं तस्यांगसंगे पुनः ।
कोऽयं कास्मि रतं नु वा कथमिति स्वल्पापि मे न स्मृतिः २

१८-६-१४

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

SPS
891.263 A 47 A
20075

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स
मेद
आत
इ
नि:
निद्रा
अंगं
अद्य
गृह्णी
तच्चे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काव्य

काव्यग्रन्थाः ।

नाम.		की.रु.आ.	टपा.रु.आ.
४९८ अश्वघाटी काव्य भा० टी०	क	०-३	०-
४९९ ऋतुसंहार काव्य भाषाटीका और संस्कृतटीकासह	क	०-७	०-
५०० कलिविडम्बन भाषाटीकासहित	(२)	०-४	०-
५०१ काव्यमंजरी (पदुमनदासकृत पुस्तक अवश्य देखने योग्य है जिसमें कमलबंध, मेरुबंध, असिबंध, छत्रचामरादिबंध चित्राकार दिखाये गये हैं)....	क	१-४	०-
५०२ किरातार्जुनीयकाव्य सटीक ग्लेज	क	२-०	०-
५०३ " " तथा रफ्	क	१-८	०-
५०४ काव्यप्रभाकर सटीक (श्रीभानुकविकृत) अर्थात् भाषा काव्यका परिपूर्ण एवं अत्यन्त अनूठा ग्रंथ	क	६-०	०-
५०५ कुमारसंभव सटीक	खे	१-४	०-
५०६ कृष्णकर्णामृत	(२)	०-४	०-
५०७ गीतगोविन्द संस्कृतटीका और भाषाटीका	क	१-०	०-
५०८ गीतगोविन्दमूल	क	०-२	०-

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

SRINAGER, Kashmir. BOOK SELLERS

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE